सिफ़रा

निरगुण सरगुण

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

१) पीर पैगम्बर गुर अवतार करन विचार, एका घर वज्जे वधाईआ। असीं सेवा करीं जुग चार, जुग जुग वेस वटाईआ। मन्नदे रहे इक्क निरँकार, निरगुण नूर रुशनाईआ। पंज तत्त काया कर अकार, लोकमात खुशी हंढ्ढाईआ। दोए दोए रूप विच्च संसार, जीवण जुगत बिताईआ। सरगुण नाता जोड़िआ पुरख नार, पुत्तर धीआं बंस सुहाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, जोती जोत जोत मिलाईआ। सरगुण खेल विच्च गए हार, जगत बंधन नाल रखाईआ। निरगुण जोत कर उतरे पार, घर मिली सरन सरनाईआ। करे खेल अगम्म अपार, आपणा राह आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ ।

सरगुण तेरी जगत धार, गुर अन्तर मुख छुपाया। पंज तत्त काया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, जगत सवाणी सेज हंढाया। आत्म अन्तर खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ आप कराया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका घर बाहर, एका मन्दर डेरा लाया। सरगुण आसा तृस्ना करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया।

सरगुण मंगे शमशीर, तीर कमान चिल्ला नाल उठाईआ। निरगुण करे अन्त अख़ीर, आपणा रूप ना कोई वखाईआ। सरगुण जोधा सूरबीर बली बलवान, भुजां आपणीआं आप उठाईआ। निरगुण करे खेल महान, हुक्मी हुक्म हुक्म वरताईआ। सरगुण वेखे जगत नेत्र मार ध्यान, निरगुण बण उठ करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर धार विच्च संसार, निरगुण सरगुण हो उजिआर, आपणा रंग आप वखाईआ।

निरगुण तत्त कहे तन नानक, सरगुण नानक निरगुण रिहा वडयाईआ। निरगुण खेल अत भयानक, सरगुण निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सरगुण कहे प्रभ खेल अचन अचानक, भेव कोई ना आईआ। निरगुण कहे सरगुण अणजाणत, सरगुण कहे बिन निरगुण बूझ ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ।

सरगुण कहे निरगुण बाप, निरगुण कहे सरगुण पूत रूप अखवाईआ। सरगुण कहे निरगुण परताप, निरगुण कहे सरगुण मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण जाप, निरगुण कहे सरगुण करे पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साथ, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी ना कोई रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण समरथ, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी चले ना कोई वडयाईआ। सरगुण कहे महिमा अकथ्थ, निरगुण कहे सरगुण रागी राग अलाईआ। सरगुण कहे निरगुण सच्ची वथ, निरगुण कहे सरगुण आप वरताईआ । सरगुण कहे निरगुण वसे घट घट, निरगुण कहे सरगुण मेरे सिर पड़दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

सरगुण कहे निरगुण दाता, निरगुण कहे सरगुण भंडार वरताइंदा। सरगुण कहे निरगुण पुरख बिधाता, निरगुण कहे सरगुण पुरख नारी खेल कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण उत्तम ज़ाता, निरगुण कहे सरगुण ज़ात पात रंग चढ़ाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बैठा रहे इक्क इकांता, निरगुण कहे सरगुण अंदर मेरा आसण लाइंदा। सरगुण कहे निरगुण खेल तमाशा, निरगुण कहे सरगुण गोपी काहन रूप धराइंदा। सरगुण कहे जोत प्रकाशा, निरगुण कहे सरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सचखण्ड रक्खे वासा, निरगुण कहे सरगुण अंदर रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा ।

सरगुण कहे निरगुण बलवान, आदि जुगादि समाया। निरगुण कहे सरगुण मेरा निशांन, लोकमात मात वडिआया। सरगुण कहे निरगुण मेहरवान, निरगुण कहे सरगुण दीनन दया कमाया। सरगुण कहे निरगुण बेपहचान, निरगुण कहे सरगुण मेरा रूप वटाया। सरगुण कहे मेरा भगवान, निरगुण कहे सरगुण साचा पूत सुहाया। सरगुण कहे निरगुण देवे दान, निरगुण कहे सरगुण साची वंड वंडाया। सचखण्ड करे खेल महान, आपणा झगढ़ा आप मुकाया। आपणी इच्छया कर परवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा अंग वखाया। गुर गुर रूप विच्च जहान, लोकमात फेरा पाया। बाहरों दिसे पंज तत्त दुकान, सरगुण रूप नज़री आया। अंदर लुकया रहे भगवान, निरगुण आपणा मुख छुपाया। बाहरों बोले रसना जबान, बत्ती दन्द जगत वखाया। अंदरों निरगुण देवे धुर फ़रमाण, सचखण्ड निवासी आप सुणाया। बाहरों वेखण नक्क मूह हत्थ दो दो कान, अंदर बिन रंग रूप रिहा समाया। बाहरों तक्कण बिरध बाल जवान, अंदर निरगुण बिरध बाल रूप ना कोई वटाया। बाहरों तक्कण जीव जहान, जगत नेत्र वेख वखाया। अंदरों निरगुण भगतां वखाए आपणा सच निशान, सति सतिवादी दया कमाया। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण खेल श्री भगवान, गुर गुर बंधन एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा टिक्का आपणे मस्तक इक्क लगाया।

सरगुण कहे निरगुण बेपरवाह, बेअन्त भेव ना आइंदा। निरगुण कहे सरगुण चलाए राह, लोकमात राह वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण शहनशाह, निरगुण कहे सरगुण जीव जंत रईयत हंढाइंदा। सरगुण कहे निरगुण प्रगटाए आपणा नां, निरगुण कहे सरगुण रसना जेहवा सर्ब जपाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे थां, निरगुण कहे सरगुण मेरा बंक सुहाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आदि जुगादि बेपहिचां, निरगुण कहे सरगुण मेरा रूप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणे रंग रंगाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण बेअन्त, निरगुण कहे सरगुण सन्त रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा कन्त, निरगुण कहे सरगुण बण सवाणी साची सेव कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण आदि अन्त, निरगुण कहे सरगुण जुग जुग वेस वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा मणीआ मंत, निरगुण कहे सरगुण मेरा नाउँ सलाहीआ । सरगुण कहे निरगुण वसे धाम सोभावन्त, निरगुण कहे सरगुण मेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ।

निरगुण कहे सरगुण सुखवन्त, सरगुण कहे निरगुण हत्थ वडयाईआ। निरगुण कहे सरगुण सोभावन्त, सरगुण कहे निरगुण सच्चा माहीआ। निरगुण कहे सरगुण महिमा अगणत, सरगुण कहे निरगुण हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाईआ।

सरगुण कहे निरगुण खेल, निरगुण कहे सरगुण मेल मिलाइंदा। सरगुण कहे

निरगुण सज्जण सुहेल, निरगुण कहे सरगुण संग रखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम नवेल, निरगुण कहे सरगुण बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा वेस वखाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण दातार, निरगुण कहे सरगुण होए सहाईआ। सरगुण कहे निरगुण प्यार, निरगुण कहे बिन सरगुण प्यार मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण आधार, निरगुण कहे बिन सरगुण टेक ना कोई रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण जैकार, निरगुण कहे बिन सरगुण जै जैकारा ढोला ना कोई सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण उजिआर, निरगुण कह सरगुण करे जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ।

सरगुण कहे निरगुण सुख, निरगुण कहे सुख सरगुण विच्च रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण उजल मुख, निरगुण कहे सरगुण साचे मुख सलाहीआ। सरगुण कहे निरगुण कदी ना आया किसे कुक्ख, निरगुण कहे सरगुण मेरी कुख सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना मानस ना कोई मानुख, निरगुण कहे सरगुण मेरा मानस रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना तृस्ना ना कोई भुक्ख, निरगुण कहे सरगुण मिलण दी तृस्ना भुक्ख मैं रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सरगुण कहे निरगुण जस, निरगुण कहे सरगुण जस मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण आपणे अंदर गिआ वस, निरगुण कहे मैं सरगुण अंदर डेरा लाईआ । सरगुण कहे निरगुण जोत करे प्रकाश, निरगुण कहे सरगुण अंदर नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाईआ।

सरगुण कहे निरगुण मित, निरगुण कहे सरगुण मित्र प्यारया हत्थ वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण रहे नित, निरगुण कहे सरगुण नवित्त फेरा पाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे हित, निरगुण कहे सरगुण मिल मिल खुशी मनाईआ। सरगुण कहे निरगुण अबिनाशी अचुत, निरगुण कहे सरगुण चेतन्न रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण एका घर घर मन्दर दए वडयाईआ।

सरगुण कहे निरगुण बंक, निरगुण कहे सरगुण बंक दुआरी सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण डंक, निरगुण कहे सरगुण मेरा नाद सुणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण महिमा अगणत, निरगुण कहे सरगुण मेरा भेव खुलायंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा ।

सरगुण कहे निरगुण ओट, निरगुण कहे सरगुण माण वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण भंडार अतोट, निरगुण कहे सरगुण हत्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे

साचे किला कोट, निरगुण कहे सरगुण अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप चलाईआ। (१६ माघ २०१८ बि धिंगाली)

२) सरगुण कहे निरगुण सहारा, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा रूप ना कोई जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण शहनशाह सच्ची सरकारा, निरगुण कहे सरगुण सच्ची कार कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण हुक्म वरतारा, निरगुण कहे सरगुण चले सच रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंधन आप रखवाईआ।

सरगुण कहे निरगुण पुरख अकाल, निरगुण कहे सरगुण जोत रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण दीन दयाल, निरगुण कहे सरगुण साचा लाल नाउँ रखवाईआ। सरगुण कहे निरगुण चले अवल्लड़ी चाल, निरगुण कहे सरगुण चाल निराली इक्क जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना खाए काल, निरगुण कहे सरगुण तेरे काल चरन सरन बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ।

सरगुण कहे निरगुण नूरानी जोत, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी जोत कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे कोट, निरगुण कहे बिन सरगुण लोकमात किला कोट नज़र कोई ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण उत्ते मैं होया मोहत, निरगुण कहे मैं सरगुण पिच्छे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अव्वलड़ा आप कराईआ।

सरगुण कहे निरगुण अनुभव प्रकाश, निरगुण कहे सरगुण नूर नूर समाया। सरगुण कहे निरगुण शाहो शाबाश, निरगुण कहे सरगुण शहनशाह लोकमात वडिआया। सरगुण कहे मैं निरगुण दास, निरगुण कहे मैं सरगुण बण दासी दास सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाया।

सरगुण कहे निरगुण अछल, निरगुण कहे अछल सरगुण विच्च समाया। सरगुण कहे निरगुण बीर बल, निरगुण कहे बल सरगुण अंदर धराया। सरगुण कहे निरगुण अट्टल, निरगुण कहे अट्टल मुनारा सरगुण मात वडिआया। सरगुण कहे निरगुण जोत रिहा रल, निरगुण सरगुण तेरी जोती जोत डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पाया।

सरगुण कहे निरगुण गुण निधान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा गुण कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण शाह सुल्तान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी चले ना कोई शहनशाहीआ। सरगुण कहे निरगुण इक्क सति निशान, निरगुण कहे बिन सरगुण

मेरा सति निशाना ना कोई उठाईआ। सरगुण कहे निरगुण नौजवान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा जोबन ना कोई हंढाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे सचखण्ड मकान, निरगुण कहे बिन सरगुण सचखण्ड दुआरा कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण इमान, निरगुण कहे बिन सरगुण शरअ ना कोई चलाईआ । सरगुण कहे निरगुण सूरबीर बलवान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा बल ना कोई अजमाईआ। सरगुण कहे निरगुण इक्को आण, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा हुक्म कीमत कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खेल खेल आपणी खुशी मनाईआ।

सरगुण कहे निरगुण सूरा बंग, निरगुण कहे सरगुण सूरबीर प्रगटाया। सरगुण कहे निरगुण मरदंग, निरगुण कह मरदंग सरगुण हत्थ फड़ाया। सरगुण कहे निरगुण बिन रूप रंग, निरगुण कहे आपणा रूप रंग सरगुण मात धराया। सरगुण कहे निरगुण सोहे सच पलंघ, निरगुण कहे सच पलंघ सरगुण अंदर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि निरगुण सरगुण आपणी वंड वंडाया।

सरगुण कहे निरगुण निरँकार, निरगुण कहे सरगुण विहार चलाईआ। सरगुण कहे निरगुण अगम्म अपार, निरगुण कहे सरगुण अगम्मड़ी धार वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अलक्ख जैकार, निरगुण कहे सरगुण जै जै मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरुगण किसे ना आए विचार, निरगुण कहे सरगुण अंदर वड़ वड़ आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव रखाईआ। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी इन्दर राम)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

३) सरगुण कहे निरगुण वसे ओहले, निरगुण कहे सरगुण आपणा भेव जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरे अन्तर बोले, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी धुन ना कोई सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण रहे सदा रहे अडोले, निरगुण कहे सरगुण अडोल रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा पड़दा खोल्हे, निरगुण कहे सरगुण सेवा करनी मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण साचा तोल तोले, निरगुण कहे सरगुण कंडा हत्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण सुणाए अगम्मी ढोले, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरे गीत ना कोई सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरे अन्तर मौले, निरगुण कहे सरगुण फल फुलवाड़ी इक्क लगाईआ। सरगुण कहे निरगुण अमृत भरया कौले, निरगुण कहे सरगुण हरी सिंच क्यारी आप कराईआ। सरगुण कहे निरगुण देवे माण उप्पर धौले, निरगुण कहे सरगुण धौल उप्पर मेरी करे रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण नूर अव्वले, निरगुण कहे सरगुण मेरा नूर इल्लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर विच्च धराईआ।

सरगुण कहे निरगुण परवरदिगार, एका नूर समाया। निरगुण कहे सरगुण मेरा

यार, साची यारी आप हंढ्ढाया। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम नयार, निरगुण कहे सरगुण खेड़ा आप वसाया। सरगुण कहे निरगुण हक़ बोले जैकार, निरगुण कहे सरगुण जगत रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाया।

सरगुण कहे निरगुण बेऐब, निरगुण कहे सरगुण ऐब ना कोई जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा साहिब, निरगुण कहे सरगुण मेरा साबत रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण गायब, निरगुण कहे सरगुण ज़ाहिर ज़हूर नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंधन आप वखाईआ।

सरगुण कहे निरगुण जलाल, निरगुण कहे सरगुण जलवा मात प्रगटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दलाल, निरगुण कहे सरगुण विचोला खेल कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे सच्ची धर्मसाल, निरगुण कहे सच्ची धर्मसाल सरगुण गढ़ बणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वजाए ताल, निरगुण कहे ताल तलवाड़ा सरगुण हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भरम आप चुकाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण जोती जाता, निरगुण कहे सरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण पुरख बिधाता, निरगुण कहे सरगुण पुरख रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना किसे पछाता, निरगुण कहे सरगुण गुरमुख आपणे आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सरगुण कहे निरगुण संयोग, निरगुण कहे सरगुण संग निभाया। सरगुण कहे निरगुण दरस अमोघ, निरगुण कहे सरगुण दरसी दरस दे दे तृप्त बुझाया। सरगुण कहे निरगुण वसे चौदां लोक, निरगुण कहे सरगुण कोटन कोट लोक चरनां हेठ दबाया। सरगुण कहे निरगुण सुणाए सलोक, निरगुण कहे कोटी कोट सलोक सरगुण रहे सालाहिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाया।

सरगुण कहे निरगुण सतिगुर, निरगुण कहे सरगुण गुर गुर रूप वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण लेखा जाणे धुर, निरगुण कहे सरगुण धुर मस्तक लेख समझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण चढ़े साचे घोड़, निरगुण कहे सरगुण तेरा प्रेम घोड़ा इक्क वखाइंदा । सरगुण कहे निरगुण जाए बौहड़, निरगुण कहे सरगुण तेरी जुग जुग सेव कमाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आदि जुगादि रिहा दौड़, निरगुण कहे सरगुण सदा सदा आपणी गोद बहाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बुझाए औड़, निरगुण कहे सरगुण अमृत मेघ बरसाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दो जहानां लाए पौड़, निरगुण कहे सरगुण फड़ बांहों उप्पर उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण इके घर, घर घर विच्च वेख वखाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण अमीर, निरगुण कहे सरगुण उमराओ उपजाईआ। सरगुण कहे निरगुण पीरे पीर, निरगुण कहे सरगुण पीरी तेरे हत्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण मारे ज़ंजीर, निरगुण कहे सरगुण जगत ज़ंजीर तेरी वस्त वखाईआ। निरगुण सरगुण आदि अन्त जुगाँ जुगन्त खेल अखीर, आखर आपणी खेल वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सच निशान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दो जहान रिहा झुलाईआ।
(१६ माघ २०१८ बिक्रमी वकील सिँघ)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

४) सरगुण कहे निरगुण कार, निरगुण तेरा भेव कोई ना पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा नूर उजिआर, नूर नज़र किसे ना आइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा सचखण्ड दुआर, अंदर वड़ दरस कोई पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा वड भंडार, वड भण्डारी हत्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा।

सरगुण कहे तेरा भेव नयारा, अभेद तेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण तूं अगम्म ठठिआरा, घड़न भन्नणहार अखवाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा सच विहारा, तूं साची सेव कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव दएं अधारा, आपणा बंस सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण तूं सति वरतारा, रजो तमो सतो आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश तत्तव तत्त नाच कराईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा पसारा, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा जैकारा, चारे बाणी दए दुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरी सितारा, चारे खाणी तन्द रखवाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे पाईआ।

सरगुण कहे निरगुण तेरा नूर, नूरो नूर समाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सर्ब कला भरपूर, बेअन्त नाउँ धराइंदा। सरगुण कहे निरगुण आसा मनसा पूर, निराशा रूप ना कोई जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा आदि जुगादि सति सरूप, सच खुमारी इक्क रखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तूं आदि जुगादि हज़ूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण मीत, मित्र प्यारे सच्चे माहीआ। सरगुण कहे निरगुण अतीत, त्रैगुण अतीता आसण लाईआ। सरगुण कहे निरगुण अनडीठ, अनडिठड़ा धाम सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण सुणाए गीत, अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण ठांडा सीत, अगनी तत्त ना कोई रखाईआ। सरगुण कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ।

सरगुण कहे निरगुण सच, घर साचे सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आपणे अंदर गिआ रच, रूप रंग रेख ना कोई जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जोती जोत रिहा मच्च, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। सरगुण कहे निरगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण निरँकार, निराकार समाईआ। सरगुण कहे निरगुण दातार, दाता दानी वड वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण भंडार, बण भण्डारी आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण पसार, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। सरगुण कहे निरगुण जीव जंत आधार, घट घट रिहा समाईआ। सरगुण कहे निरगुण नाद शब्द धुनकान, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण इच्छआ वेद चार, शास्त्र सिमरत आप सालाहीआ। सरगुण कहे निरगुण पराण पराणी दए आधार, अठ्ठ दस मेल मिलाईआ। सरगुण कहे निरगुण शब्द नाद ज्ञान, ज्ञाता गीता इक्क पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण ईमान, अंज़ील कुरान रिहा सुणाईआ। सरगुण कहे नानक नाम निशान, नाम सति सति प्रगटाईआ। सरगुण कहे निरगुण निशान, गोबिन्द सूरा रिहा झुलाईआ। सरगुण कहे लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेड़ा आप वसाईआ।

सरगुण कहे निरगुण अधार, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। सरगुण कहे निरगुण अवतार, जुग जुग वेस वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण सिकदार, गुर गुर रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण प्यार, निरगुण सरगुण संग निभाईआ। सरगुण कहे निरगुण विहार, बण विवहारी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग जुग खेल कराईआ।

सरगुण कहे निरगुण जोग, हरि साचा सच कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण संजोग, सति सतिवादी आप कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण भोग, साचा भोगी भोग भुगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण होद, आदि जुगादि ना कोई मिटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण ओट, दूसर ओट ना कोई तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेड आप कराइंदा।

सरगुण कहे निरगुण आस, आदि अन्त रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण बुझाए प्यास, तृस्ना रोग मिटाईआ। सरगुण कहे निरगुण वखाए रास, मण्डल मंडप दए वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे प्रकाश, दो जहान जहान रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे पास, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल तमाश, दीन दुनी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपणे विच्च छुपाईआ।

सरगुण कहे निरगुण जगत, जागरत जोत जगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण भगत,

भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सन्त, सति सति अंदर धार वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण कन्त, नर नरायण साची सेजा सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बणाए बणत, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा।

सरगुण कहे निरगुण रहे जुग चार, आदि जुगादि दया कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेले खेल विच्च संसार, रूप अनूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण हर घट पावे सार, घट घट आसण लाईआ। सरगुण कहे निरगुण गुर अवतार, पीर पैगम्बर रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण अकार, साकार नज़री आईआ। सरगुण कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहाईआ।

सरगुण कहे निरगुण धारा, धरनी धरत धवल चलाइंदा। सरगुण कहे निरगुण पसारा, निरधन सरधन रंग रंगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जैकारा, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण घर बाहरा, घर मन्दर सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तीर्थ तट्ट किनारा, सच सरोवर इक्क वडिआइंदा। सरगुण कहे निरगुण शब्द जैकारा, बोध ज्ञान आप दृढ़ांइंदा। सरगुण कहे निरगुण लिखारा, जुग जुग आपणा लेख लिखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण करे आपणी कारा, करता पुरख नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कमाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण उडीक, नित नित आस रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अतीत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सरगुण कहे निरगुण ठांडा सीत, सीतल धारा इक्क वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण मन्दर मसीत, मट्ठ शिवदवाला नाउँ धराईआ। सरगुण कहे निरगुण अजीत, जितया कदे ना जाईआ। सरगुण कहे निरगुण नज़ीक, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण कोटन कोट काल वेखे ठीक, जुग जुग ठीकरा भन्न वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण बेप्रीत, साची प्रीत ना किसे समझाईआ। सरगुण कहे निरगुण जुग जुग गुर अवतारा कोलों चलौदा रिहा आपणी रीत, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल कराया धंदे लाया जीव जंत मन्दर मसीत, मुल्लां शेख़ पंडत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण निरगुण आपणा आप वखाईआ।

सरगुण कहे निरगुण अभुल्ल, भुल्ल कदे ना जाईआ। सरगुण कहे निरगुण अमुल्ल, मुल्ल ना कोई चुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण अतुल, तोलयां तोल ना कोई तुलाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना जाए रुल, एका रंग समाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना जाए हुल, आदि जुगादि रिहा लहराईआ। सरगुण कहे निरगुण जाए आपणी कुल, दूसर भेव कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सरगुण बैठा सीस झुकाईआ।

सरगुण मंगे दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। किरपा कर श्री भगवान, हउँ एका मंग मंगाया। तूं खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेस वटाया। तूं लक्ख चुरासी कर प्रधान, घर घर जोत जगाया। तूं गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे दान, आपणा नाम पढ़ाईआ। तूं काया मन्दर कर परवान, आत्म सेजा आसण लाया। तूं शब्द अनादी सच फ़रमाण, धुरदरगाही आप सुणाया। हउँ बाला बाल नादान, तेरा अन्त कोई ना आया। तूं भाण्डे घड़ें चतर सुघड़ सुजान, विच्च आपणी वस्त टिकाया। अन्त मेटें जगत निशान, थिर कोई रहण ना पाया। आपणा दस्स भेव श्री भगवान, एह की खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाया।

घड़न भन्नण दी मेरी कार, मैं आपणा खेल खिलाईआ। कदे थथवा फड़ बणां घुमिआर, कदे ठीकर फोड़ वखाईआ। कदे विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण माया बंधन पाईआ। कदे लक्ख चुरासी कर उजिआर, घट घट जोत जगाईआ। कदे गुर पीर धर अवतार, धरनी धरत धवल दिआं वडयाईआ। कदे भगतन देवां इक्क अधार, साची भगती नाम पढ़ाईआ। कदे जल थल महीअल डूंघी कंदर वेखां गार, कदे उच्चे टिल्ले परबत आसण लाईआ। कदे वंडां वंड जुग जुग चार, चार चार बंधन पाईआ । कदे सभ नूं करां खुआर, आपणा बल रखाईआ। निरगुण नूर नूर उजिआर, दो जहान मेरी रुशनाईआ। सरगुण रहणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। पिच्छे आउँदा रिहा सरगुण रूप जामा धार, जगत नाता कर कुड़माईआ। कोई कहे राम अवतार, जनक सपुत्तरी गिआ परनाईआ । कोई कहे कृष्न मुरार, राधा आपणी गोद बहाईआ। कोई कहे मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभाईआ। कोई कहे नानक निरगुण धार, पुत्तर धीआं गिआ तजाईआ। कोई कहे गोबिन्द सरदार, बाले नीहां हेठ दबाईआ। कोई कहे लेखा वेद चार, कोई कहे पुरान पढ़ाईआ। कोई कहे गीता ज्ञान, बिन गीता हत्थ किसे ना आईआ। कोई कहे अञ्जील कुरान, आला मरतबा रहे समझाईआ। कोई कहे खाणी बाणी प्रधान, नानक अरजन करी पढ़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं सभ दा मेटां निशान, अन्तम आपणे विच्च समाईआ। कलिजुग निरगुण हो के आया विच्च जहान, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। ना कोई नारी दिसे सन्तान, पिता पूत ना कोई वडयाईआ। इक्को नाता विच्च जहान, जन भगतां नाल लिआ जुड़ाईआ। अंदर वड़ के वसां सच मकान, सच दुआरे आसण लाईआ। दिस ना आए किसे श्री भगवान, जगत लोकाई रही कुरलाईआ। हरिजन हरि जू मिल्या आण, आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक निरगुण निरगुण रिहा उठाईआ। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी धंगाली लछमण सिँघ)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

५) निरगुण कहे श्री भगवान, सरगुण देवां माण वडयाईआ। तत्तव तत्त कर प्रधान, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्म तत्त इक्क वखाण, नूर नूर नूर दरसाईआ। घट घट कर पछाण, आपणी बूझ बुझाईआ। लोकमात सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडान, गेड़ा गेड़े विच्च भवाईआ। गुर अवतार खेल महान, पीर पैगम्बर

नाल रलाईआ। सति सतिवादी सारे पाण, साची सिख्या इक्क समझाईआ। बोध अगाधी शब्द महिमान, जुग जुग फेरा पाईआ। करे खेल ख़लक महान, हरि ख़ालक बेपरवाहीआ। रहमत करे रहीम रैहमान रैहम आपणा आप कमाईआ। सरगुण देवे साचा माण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। नाम निधाना तीर कमान, साचा चिल्ला इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण सार आपे पाईआ।

सरगुण तेरी पावे सार, निरगुण दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेख विचार, सगला संग निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग अन्तम खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण दाता देवणहार, निरगुण झोली आप भराइंदा। निरगुण अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, निरगुण सच प्याला आप पिआइंदा। निरगुण एकँकार इक्क इकांता सचखण्ड वसे सच दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणा आप वडिआइंदा।

सरगुण तेरा साचा रंग, निरगुण निरगुण आप चढ़ाईआ। सरगुण तेरी जगत सेज पलँघ, निरगुण निरगुण आप हंढ़ाईआ। सरगुण तेरा नाम मरदंग, निरगुण तार सितार बिन आप वजाईआ। सरगुण तेरे वसे संग, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाईआ।

सरगुण तेरा मुक्के पन्ध, निरगुण आप मुकाइंदा। सरगुण तेरा साहिब सदा बख्शंद, जुग जुग दया कमाइंदा। सरगुण टुट्टी देवे गंढ़ु, निरगुण आपणी गंढ़ु पवाइंदा। सरगुण तेरा गीत सुहागी छन्द, निरगुण आपणा नाउँ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाइंदा।

सरगुण तेरा जगत महल्ला, निरगुण आपणी बूझ बुझाईआ। निराकार फड़ाए एका पल्ला, एका हत्थ वखाईआ। जोती शब्दी अनभव धार रला, रूप रंग रेख ना कोई वडयाईआ। सच संदेस एको घल्ला, एका करे पढ़ाईआ। वसणहारा निहचल धाम अट्टला, सरगुण तेरे अंदर डेरा लाईआ। दीपक जोती आपे बला, तेल बाती ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणा रंग चढ़ाईआ।

सरगुण रंग दए चढ़ा, निरगुण आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जुग जुग पान्धी पन्ध दए मुका, कलिजुग अन्तम फेरा पाईआ। सूरा सरबंग वेस वटा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। सरगुण तेरा निरगुण मरदंग दए वजा, आपणी सेवा आप कमाईआ। दूई द्वैती हउमे हंगता झूठी कंध दए ढाह, एका ठोकर नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वडयाईआ।

सरगुण देवे सच सहारा, निरगुण दया कमाइंदा। बन्द ताकी खोल़ किवाड़ा, आपणा

भेव चुकाइंदा। वाह ना लग्गी तत्ती विच्च संसारा, अगनी तत्त बुझाइंदा। एका देवे नाम अधारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका मन्दर इक्क घर बाहरा, एका बंक सुहाइंदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका शब्दी शब्द पढ़ाइंदा। एका राग नाद जैकारा, एका धुनी धुन समाइंदा। एका वसे सभ तो बाहिरा, निरगुण खेल कराइंदा। सरगुण तेरा मीत मुरारा, दर तेरे फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल वखाइंदा।

निरगुण सरगुण उप्पर पए तुठ, मेहरवान दया कमाईआ। एका अमृत देवे घुट्ट, अंमिउँ रस आप चखाईआ। बाल नादाना पए उठ, आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा सदा सहाईआ।

तेरा सहाई सदा सद सज्जण, हरि सच्चा आप अखवाइंदा। जुग जुग कराए एका मज़न, चरन धुड़ी टिक्का लाइंदा। सज्जण सुहेला होया परदे कज्जण, सच दुशाला उप्पर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा संग निभाइंदा।

सरगुण तेरा सगला संग, सो पुरख निरञ्जण आप निभाईआ। गृह गृह घर घर चाढ़े चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निज़ानंद दरसाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, सोहँ ढोला गाईआ। जन्म जन्म जग मुक्के पन्ध, लक्ख चुरासी रहण ना पाईआ। नाता तुटे जेरज अंड, ब्रह्मण्ड ना वेख वखाईआ। होए वसेरा सचखण्ड, अन्त जोती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाईआ।

सरगुण निरगुण रक्खे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जुगाँ जुगन्तर सुण फ़रयाद, जन भगतां होए सहाईआ। एका नाम देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, आप आपणा मेल वखाईआ। निरगुण सरगुण करे लाड, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ।

जुग जुग वेस अव्वलड़ा, निरगुण सरगुण धार। हरिजन फड़ाए पलड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। वसणहारा निहचल धाम अचलड़ा, लोकमात होए उजिआर। सच संदेसा एका घलड़ा, शब्दी शब्द शब्द जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए दीदार।

निरगुण सरगुण देवे दरस, आपणी बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हिरस अवर ना कोई वधाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अगनी तत्त बुझाईआ । जन भगतां उप्पर

कर कर तरस, आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों परख, नाम कसवटी एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता दुःख ना कोई वखाईआ।

सरगुण तेरा निरगुण सहारा, सदा सदा अखवाईआ। कलिजुग अन्तम वेख किनारा, जोती जामा भेख वटाईआ। जुग जुग दे विछड़े मेले मेलणहारा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण बंधन एका पाईआ।

निरगुण सरगुण साचा बंधन, पुरख बिधाता आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण लगाए चन्दन, तिलक लिलाटी जोत जगाइंदा। निरगुण सरगुण तोड़े फंदन, फांदी अवर ना कोई वखाइंदा। निरगुण सरगुण खेले खेल मुकन्द मनोहर मुकन्दन, कँवल नैण नैण मटकाइंदा। निरगुण सरगुण त्रिलोकी नंदन, नंद जशोधा माण दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा।

निरगुण सरगुण सच वैराग, हरि वैरागी आप उपाईआ। निरगुण सरगुण खोल़े जाग, नेत्र नैण इक्क दरसाईआ। निरगुण सरगुण अंदर लाए भाग, आपणे आसण सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण जगाए चिराग़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण सरगुण धोवे दाग़, दुरमत मैल रहण ना पाईआ। निरगुण सरगुण सच्चा काज, घर घर विच्च आप वखाईआ। निरगुण सरगुण रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। निरगुण सरगुण मारे अवाज़, शब्द अगम्मी तार हिलाईआ। निरगुण सरगुण ग़रीब निवाज़, बण निमाणा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अव्वलड़ा आप वटाईआ।

निरगुण सरगुण वेस अव्वला, भेव कोई ना पाइंदा। निरगुण सरगुण इक्क इकल्ला, लक्ख चुरासी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण वसणहारा सच महल्ला, सोभावन्त दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आप कराइंदा।

निरगुण सरगुण करे किरत, वड किरती किरत कमाईआ। निरगुण सरगुण दो जहानी फिरत, फिर फिर वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण मेटे हरस, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण होए सहाईआ।

निरगुण नूर श्री भगवान, आदि जुगादि समाया। सरगुण वेखे विच्च जहान, लोकमात फेरा पाया। साचे भगत करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। सन्तन देवे एको माण, दर दुआर सुहाया। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, आपणा रंग रंगाया। गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, एका मंतर नाम दृढ़ाया। एका इष्ट श्री भगवान, एका मन्दर डेरा लाया। सरगुण सदा करे परनाम, निउँ निउँ सीस झुकाया। निरगुण जणाए आपणी कलाम, कलमा कायनात

सुणाया। सरगुण निउँ निउँ करे सलाम, सजदा सीस वखाया। निरगुण सद सद दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप पढ़ाया। सरगुण सुणे धुर फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल रचाया।

निरगुण निराकार श्री भगवन्त, महिमा अकथ्थ कथी ना जाईआ। सरगुण गुरमुख मेला नारी कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, जूठ झूठ दए मिटाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरि सज्जण आप कराईआ। मानस जन्म ना होए भंगत, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एथ्थे ओथ्थे सच वखाए साची जन्नत, चरन सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ।

हरिजन सच्चा सरगुण धार, निरगुण मेल मिलाया। बण विचोला एकँकार, आपणा बंधन पाया। नाता तोड़ सर्ब संसार, साचा मार्ग इक्क वखाया। सुरती शब्दी करे प्यार, शब्द सुरत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण निरगुण रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बांह आपे फड़, आपणे नाल मिलाया। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी ज्ञान चन्द)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

६) निरगुण घर निरगुण वासा, सरगुण बंधन पाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धरवासा, सरगुण आस तकाईआ। निरगुण अंदर निरगुण तमाशा, सरगुण खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज लीला आप रचाईआ।

निरगुण सतिगुर गुर गुर धार, सरगुण रंग वटाईआ। नूरो नूर अगम्म अपार, अनभव प्रकाश कराईआ। बोध अगाध शब्द धुनकार, अनादी नाद सुणाईआ। नाता जोड़ गुर अवतार, लोकमात बंधन पाईआ। नेत्र लोचन खोलु किवाड़, प्रतक्ख रूप दरसाईआ। घर मन्दर कर त्यार, श्री भगवन्त सोभा पाईआ। आत्म अन्तम दे दीदार, तिंसना भुक्ख गवाईआ। सरगुण निरगुण कर प्यार, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा सदा सदा होए सहाईआ।

निरगुण सरगुण सच वसेरा, घर घर विच्च मेल मिलाइंदा। पन्ध मुकाए नेरन नेरा, दूर दुराडा मोह चुकाइंदा। इक्क वसाए साचा खेड़ा, पंज तत्त चोला आप हंढ्ढाइंदा। खुल्ला रक्खे हरि जू विहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा संग मिलाइंदा।

निरगुण सतिगुर मेहरवान, सरगुण दए वडयाईआ। गुर गुर रूप हो प्रधान, तत्तव

तत्त समाईआ। सति सतिवादी खोल्ह दुकान, नाम हट्ट वणजारा एका एक वजाईआ। लोकमात हो प्रधान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जन भगतां देवे दान, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। नाता तोड़ पंज शैतान, पंचम नाद शब्द धुंन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण वेखे चाईं चाईंआ।

निरगुण सरगुण सदा दयाल, सरगुण दया कमाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजाल, आपणा बंधन पाइंदा। पंज तत्त अंदर सच्ची धर्मसाल, घर विच्च घर आप सुहाइंदा। दीपक जोती एका बाल, अंज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। एका राग सुणाए कान, शब्दी शब्दी धुंन उपजाइंदा। आत्म परमात्म कर पहचान, पुरख बिधाता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण खेड़ा आप वसाइंदा।

निरगुण दाता गहर गम्भीर, सरगुण दए वडयाईआ। पंज तत्त काया सांत सरीर, सांतक सति सति वरताईआ। सति सन्तोखी देवे धीर, एका तत्त जणाईआ। बजर कपाटी पड़दा चीर, रूप अनूप दरसाईआ। अमृत बख्शे ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ। निरगुण सतिगुर सच्चा पीर, मुरीद मुशर्द लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सरगुण बेड़ा बन्ह्न चलाईआ।

निरगुण सतिगुर पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। सरगुण चलाए तेरा रथ, जुग जुग वेस वटाया। नाम जणाए महिमा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राया। जिस जन देवे साची वत्थ, वस्त अमोलक झोली पाया। सो सरन सरनाई जाए ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाया । लहणा देणा चुक्के सीआ साढ्ठे त्रै त्रै हत्थ, मानस जन्म लेखे लाया। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां हरिजन तेरा गाए जस, जस वेद पुरान भेव ना आया । जन भगतां पूरी करे आस, नित नवित्त वेस वटाया। खेले खेल पृथ्मी अकाश, गगन मण्डल फेरा पाया। कलिजुग अन्तम निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जामा वेस वटाया। हरिजन वसे सदा पास, सगला संग निभाया। गुरमुखां बण बण दासी दास, सेवक आपणी सेव कमाया । काया मन्दर मन्दर पावे रास, गोपी काहन आप नचाया। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जुग विछड़े लए मिलाया। लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासी डेरा लाया। अन्तम करे बन्द खुलास, राए धर्म ना दए सजाया । निरगुण मेला शाहो शाबाश, सरगुण आपणे अंग रखाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गुर चेला रूप वटाया। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी नवां चक्क दौलत सिँघ)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

७) सरगुण अंदर निरगुण लुक, लुकवीं खेल खलाइंदा। जिस जन परदा लए चुक्क, तिस जन नज़री आइंदा। अंदरे अंदर पए उठ, आपणा दरस दिखाइंदा। सरगुण उत्ते निरगुण गिआ तुठ, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख जाणे साचा सुत, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। बाहरों दिसे पंज तत्त काया बुत्त, अंदर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा आसण लाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुहाई रुत, फुल फलवाड़ी आप महकाइंदा। जिस ने सवाल कीता उठ, तिस जन आप समझाइंदा।

निरगुण सरगुण साध संगत, गुरमुख मेल मिलाईआ। अंदर चढ़े नाम रंगत, बाहर काया माटी ख़ाक दसाईआ। अद्धे बैठे नाम मंगत, अद्धे बैठे खेल खलाईआ। जिस जन प्रभ मिलण दी बणे बणत, तिस मेले सच्चा शहनशाहीआ। सरगुण बैठी साध संगत, निरगुण अंदरे अंदर खेल खलाईआ। सरगुण दिसे पंज तत्त चोला, जो जन दवारे नज़री आइंदा। निरगुण अन्तर रक्खया उहला, रूप रंग रेख ना कोई वखाइंदा। आपणा आप जीव ना जाणे मेरे अंदर कवण बोला, कवण कूटे आसण लाइंदा। कवण मां पिउ भैण भरा साक सज्जण गाए ढोला, रसना जिह्वा कवण हिलाइंदा। कवण कवण जूठ झूठ पावण रौला, कवण सच सुच्च जणाइंदा। कवण चलाए उप्पर धौला, कवण कूटो कूट फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, संगत अंदर हरि जू वड़, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा।

सरगुण संगत हरि हरि जोत, निरवैर निरवैर निरवैर आप रखवाईआ। काया बणया किला कोट, अंदर लुकिआ बेपरवाहीआ। जिस जन कढ़ु हउमे खोट, तिस आपणा आप बुझाईआ। घर तन नगारे लगाए चोट, एका डंका नाम वजाईआ। अंदर जगाए निर्मल जोत, अंदर वसणहारा फेर नज़री आईआ। झगड़न वाले बहुत, नाम पकड़न वाला विरला गुरमुख गुरसिख मिले सच्चे माहीआ। बाहरों दिसदे हिलदे होठ, अंदर हलौण वाला दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत देवे माण वडयाईआ।

अद्धे रक्खण सतिगुर आस, दिवस रैण ध्याईआ। अद्धे होए मन के दास, मन वासना फिरे भजाईआ। अद्धे जपण रसन स्वास स्वास, अद्धे गालीआं रहे कढ़ाईआ। अध्धयां करके जाणी आपणी बन्द खुलास, अद्धे ख़ाली हत्थ भवाईआ। अध्धयां वसे सदा पास, अद्धे निरास रोवण मारन धाहींआ। सतिगुर नज़र ना आए पृथ्मी आकाश, जो जन बैठे मुख भवाईआ। तिन्नां सतिगुर वसे पास, जो हरि सतिगुर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एध्थे उध्थे करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, मंगणहारी सर्ब लोकाईआ।

अद्धे मंगण शब्द घनघोर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। अद्धे रातीं उठ उठ फिरदे चोर, लुट्ट लुट्ट जीवां रहे सताईआ। अद्धे चढ़दे नाम घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। अद्धे आपणा आप रहे रोड़, विषे विकारा वक्त गवाईआ। सतिगुर पूरे दी सदा लोड़, बिन

सतिगुर पार ना कोई कराईआ। निरगुण सरगुण तेरी आपणे हत्थ रक्खी डोर, जिध्धर चाहे रिहा भवाईआ। गुर अवतारां आपणे हुक्मे देवे तोर, अन्तम आपणे विच्च लए मिलाईआ। बिन बूझे जीव पावे शोर, समझ समझ विच्च ना आईआ। अद्धे मंगदे कुछ होर, अद्धे मंगदे कुछ होर, देवणहारे घर कोई ना थोड़, जो मंगे सो वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख मनमुख मनमुख गुरमुख दोवें राह चलाईआ।

निरगुण सुणे निरगुण सुणाए, सरगुण निरगुण आपणी धार रखाइंदा । निरगुण बोले निरगुण गाए, निरगुण आपणी झोली पाइंदा। निरगुण बहि बहि खुशी मनाए, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। सरगुण चोला परदा पाए, काया माटी हट वखाइंदा। बिन निरगुण सरगुण रहण ना पाए, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वखाइंदा। सरगुण अंदरों निरगुण आपणा बाहर कढाए, पवण स्वास ना कोई चलाइंदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण सभ करे हाए हाए, सरगुण अंदर निरगुण नज़र ना आइंदा। बिन निरगुण सरगुण किसे ना थाए, सरगुण निरगुण बिना ना सोभा पाइंदा। जिस सरगुण अंदर निरगुण डेरा लाए, सो सरगुण लोकमात बूझ बुझाइंदा। (१०-६६२)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

८) शब्द गुरू नाता नाल देह, देह शब्द गुरू अखवाईआ। निरगुण सरगुण लग्गे नेंह, दो जहान वज्जे वधाईआ। जिस वेले तन माटी हो जाए खेह, मड़ी गोर विच्च समाईआ। सतिगुर शब्द फेर वी भगतां उत्ते बरख आपणा मेंह, मेघ अमृत आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देह शब्द जोत मिल के आपणी कार कमाईआ। (१६-६४३)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

९) सरगुण तेरा घाड़न घड़, हरि निरगुण खेल खिलाया। निरगुण अंदर बैठा वड़, आपणा मुख छुपाया। साचे पौड़े गिआ चढ़, साचा मन्दर इक्क सुहाया। निशअक्खर बाणी रिहा पढ़, बोध अगाध समझाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हाया। अमृत नुहाए साचे सर, सरोवर इक्को इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा खेल कराया।

सरगुण तेरा जोड़ जुड़ा, हरि अचरज बणत बणाईआ। निरगुण अंदर डेरा ला, आपणा आसण रिहा सुहाईआ। निर्मल दीप जोत जगा, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ । एका नाद दए वजा, धुन अनादी नाद सुणाईआ। साचा सोहला आपे गा, एका करे पढ़ाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा रंग वखाईआ।

सरगुण तेरा लेखा पंज तत्त, हरि तत्तव तत्त रखाइंदा। तेरे अंदर खेल समरथ, हरि आपणी खेल कराइंदा। नाम अनमुल्ली रक्खे वत्थ, साचे हट्ट विकाइंदा। घर सरोवर वखाए तट्ट, तट्ट किनारा आप बणाइंदा। घर दीपक जोत लट लट, नूर नूराना डगमगाइंदा । घर निरगुण होए प्रगट, सरगुण माण वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा रंग महल्ल इक्क सुहाइंदा।

सरगुण तेरा सच मुनारा, हरि तत्तव तत्त उपाईआ। अंदर वड़ हरि निरँकारा, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ । खेल खेल अगम्म अपारा, खेलणहारा दिस ना आईआ। आदि जुगादी साची कारा, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार दे सहारा, एका ओट जणाईआ। एका नाम सति वरतारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण भंडारा इक्क वखाईआ।

सरगुण तेरे अंदर भंडार, निरगुण आपणा आप टिकाइंदा। जुग जुग बणे मात वरतार, गुर गुर रूप वटाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा भंडार इक्क समझाइंदा।

सरगुण तेरे अंदर वस्त अनमोल, निरगुण आपणी आप रखाईआ। आपणा पड़दा लैणा खोल्, घर वेखणा चाईं चाईंआ। लोकमात ना रहणा अनभोल, भुल्ल रुल्ल ना जन्म गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल काया चोल, चोली काया इक्क समझाईआ।

सरगुण तेरे अंदर वस्त अतुट, अतोट हरि रखाइंदा। तूं आपणा पड़दा वेख चुक, सतिगुर साचा सच समझाइंदा। दरस दिखाए जो बैठा लुक, नेत्र नैणां नाल मिलाइंदा। पंच विकारा जड़ देवे पुट्ट, सच सुच्च इक्क जणाइंदा। नाम प्याला देवे घुट्ट, मधुर जाम हत्थ रखाइंदा। आवण जावण जाए छुट्ट, सरगुण निरगुण विच्च समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा बंधन आप तुड़ाइंदा।

सरगुण तेरा सच दुआरा, हरि साचा सोभा पाइंदा। जुग जुग खेल करे निरँकार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वेखणहारा, रूप अनूप वखाइंदा। कलिजुग अन्तम हो उजिआरा, जोती जामा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी लै भंडारा, निरगुण लोकमात फेरा पाइंदा। साचा हट्ट खोल् वणजारा, साची वस्त विच्च टिकाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यारा, प्रेम सिख्या इक्क समझाइंदा। सन्तां देवे इक्क हुलारा, साची जोती आप मिलाइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लाहिंदा। गुरसिखां देवे दरस दीदारा, निझ आत्म मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, हरि ख़ालक ख़लक वखाइंदा। बेऐब वेखे परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा पन्ध मुकाइंदा।

सरगुण तेरा मुक्के पन्ध, निरगुण आप मुकाईआ। एका गीत गौणा छन्द, सोहँ रिहा समझाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। दीन दयाल ठाकर सदा बख्शंद, स्वामी सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सरगुण तेरी नंगी ना होवे कंड, निरगुण आपणा पड़दा पाईआ। तेरा विकारा करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। तेरा नाता पार कराए ब्रह्मण्ड, इंड पिण्ड ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वडयाईआ।

सरगुण रूप गुर गुर धार, पंचम पंच समाया। सरगुण रूप भगत आधार, भगवन भगती एका लाया। सरगुण रूप सन्त संसार, निरगुण आपणा रंग चढ़ाया। सरगुण गुरमुख खेल अपार, काया चोली भेव छुपाया। सरगुण गुरसिख कर त्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाया। कलिजुग अन्तम खेल अपार, निराकार आप कराया। गुरमुख साचे कर प्यार, त्रैगुण अतीता मेल मिलाया। ठांडा सीता इक्क दरबार, दर दरवाज़ा दए खुल्ह़ाया। जन्म जन्म दे विछड़े मेले यार, तुट्टी गंढु पवाया। लक्ख चुरासी पार किनार, राए धर्म ना दए सजाया। काल महांकाल रोवे नेत्र ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। जिस मिल्या आप निरँकार, तिस माया पोह ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरिजन साचे आप मिलाया।

हरिजन हरि जू मिल्या आण, आपणी दया कमाईआ। शब्द संदेसा धुर फ़रमाण, अगम्मी नाद सुणाईआ। पंज शब्द होए हैरान, प्रभ अचरज खेल वखाईआ। साड्डी करे ना कोई पहचान, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। असीं बन्द होए पंज तत्त काया मकान, काया मकबरा इक्क बणाईआ। हरिजू सच संदेसा लै के आया सच निशान, सच निशाना दए वखाईआ। साड्डे उप्पर सेज महान, सो पुरख निरञ्जण आप लगाईआ। आत्म परमात्म वेखे मार ध्यान, जोती जोत कर रुशनाईआ। कलिजुग अन्तम प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, साचा मार्ग रिहा चलाया। एका वार देवे ब्रह्म ज्ञान, जिस जन आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण सज्जण लए फड़, निरगुण दाता अंदर वड़, अंदर बाहर भीतर आपणा रंग वखाईआ।

अंदर बाहर इक्को रंग, निरगुण सरगुण आप रंगाइंदा। गुरमुख मेला सूरे सरबंग, गुर गुर गोद उठाइंदा। नाद अनादी इक्क मरदंग, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर मन्दर आप सुहाइंदा।

साचा मन्दर सतिगुर चरन, दूसर अवर ना कोई वडयाईआ। नेत्र खुल्ह़े हरन फरन, द्वैती पड़दा दए उठाईआ। नाता तुटे मरन डरन, जीवण मुकत कराईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता इक्क वखाए साची सरन, सरनगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरिजन साचे आपणा संग निभाईआ।

सगला संग हरिजू साथा, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दाता, नाम अमोलक झोली पाइंदा। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा सतिगुर चन्द चढ़ाइंदा। चरन कँवल इक्को नाता, पुरख बिधाता आप बंधाइंदा। काया मन्दर अंदर बह बह गाए गाथा, आपणी सिफ्त सुणाइंदा। सर्ब कल आपे समराथा, दूसर ओट ना कोई तकाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन दरस दिखाइंदा। अग्गे नेड़े रक्खे वाटा, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। खेले खेल बाज़ीगर नाटा, सवांगी आपणा सवांग रचाइंदा। कलिजुग अन्त वेखण आया तमाशा, लक्ख चुरासी नाच नचाइंदा। हरिजन तेरे दरस प्यासा, दर दर घर घर फेरी पाइंदा। निझ आत्म परमात्म कर कर वासा, झूठी वासना बाहर कढाइंदा। लेखे लाए पवण स्वासा, सोहँ अजपा जाप जपाइंदा। चरन कँवल सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, जन भगतां देवे नाम दिलासा। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी पूरन चन्द)

१०) पंज तत्त मेला हरि निरँकार, सरगुण निरगुण दया कमाइंदा । पंज तत्त अंदर सतिगुर धार, गुर गुर शब्द अलाइंदा। पंज तत्त अंदर जोत निरँकार, जोती जोत डगमगाइंदा। पंज तत्त अंदर अमृत ठंडा ठार, सच सरोवर इक्क भराइंदा। पंज तत्त अंदर सूरज चन्द करन निमस्कार, मण्डल मंडप सीस झुकाइंदा। पंज तत्त अंदर विष्न ब्रह्मा शिव चरन धूढ़ी मंगण छार, सीस जगदीस राह तकाइंदा। पंज तत्त अंदर सच गुफ्तार, गुफ्त शनीद आप समझाइंदा। पंज तत्त गुर अवतार, पीर पैगम्बर रूप वटाइंदा। पंज तत्त अंदर धुर फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा । पंज तत्त अंदर नाम ज्ञान, सच ज्ञाना इक्क दृढ़ांइंदा। पंज तत्त अंदर खेल महान, ख़ालक ख़लक आप खलाइंदा। पंज तत्त अंदर चार जुग दी वेखे आण, चारे खाणी चारे बाणी बाण लगाइंदा। पंज तत्त अंदर हरि का मकान, नानक निरगुण सिफ्त सलाहिंदा। पंज तत्त अंदर नानक अञ्जण देवे दान, आपणी भिच्छया झोली पाइंदा। पंज तत्त अंदर अमरदास कराए इशनान, अमरापद इक्क वखाइंदा। पंज तत्त अंदर रामदास करे ध्यान, वड ध्यानी मेल मिलाइंदा। पंज तत्त अंदर गुरू अरजन धुर बाणी लाए बाण, पुरख अबिनाशी एका पाइंदा। पंज तत्त अंदर गुरू ग्रन्थ गुरदेव बणाया विच्च जहान, चार वरन अठारां बरन जीव जंत सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अंदर तीर कमान, हरि गोबिन्द खण्डा खड़ग हत्थ उठाइंदा। पंज तत्त अंदर हरिराए दए ब्यान, लिख लिख लेख सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अंदर हरिकृष्ना छोटे बाले दए ज्ञान, गूंगयां ज्ञान आप समझाइंदा। पंज तत्त अंदर गुर तेग बहादर झुलाया सच निशान, पंज तत्त आपणा भेट चढ़ाइंदा। पंज तत्त अंदर गोबिन्द सूरा प्रगटया आप बलवान, पुरख अकाल आपणा सुत बणाइंदा। पंज तत्त अंदर पंज प्यारे कर परवान, धुर फ़रमाणा हत्थ फड़ाइंदा। पंज तत्त अंदर गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहिंदा। पंज तत्त अंदर नानक गोबिन्द दे दे गिआ ज्ञान, अक्खर अक्खर जगत समझाइंदा। पंज तत्त अंदर सूरबीर

सुल्तान दस्स के गिआ निशान, सच निशाना इक्क लगाइंदा। पंज तत्त सम्बल घर बणे मकान, साढ़े तिन्न हत्थ वंड वंडाइंदा। पंज तत्त निरगुण वेस करे श्री भगवान, पंज तत्त आपणे उप्पर पड़दा पाइंदा। पंज तत्त अंदर गोबिन्द खण्डा चमके दो जहान, नाम खण्डा इक्क उठाइंदा। पंज तत्त अंदर धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी जुग जुग आप सुणाइंदा। बिनां पंज तत्त हरि जू किसे ना दस्से आपणा नाम, आपणी इच्छया खातर पंज तत्त आपणा डेरा लाइंदा। कलिजुग अन्तम खेल महान, भेव कोई ना पाइंदा। जिस काया अंदर वसे आप मेहरवान, तिस उप्पर मेहर नज़र आप टिकाइंदा। जे कोई आ के मथ्था टेके उहनूं नज़री आए विष्नूं भगवान, पूरन सिँघ पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। एह झूठी माटी खेल जहान, जगत खेड़ा आप वसाइंदा। जिस ने मिलणा सतिगुर पूरे जाणी जाण, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। राती सुत्तयां गुरसिखां अग्गे खलोवे आण, गोबिन्द आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तम भरम भुलेखे विच्च आप भुल्ल गिआ भगवान, आपणा जोती जामा पाइंदा। जगत नेत्र दिसे ना शाह सुल्तान, आत्म परमात्म नेत्र खेतर ना कोई खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आदि जुगादि सदा सद समाइंदा। (१० ६८०—६८१)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

११) तारनहारा आ गिआ, निरगुण जोत कर उजिआर। नाउँ निरँकारा आपणा नाउँ रखा लिआ, निरगुण रूप अपर अपार। सतिजुग साचा मार्ग ला लिआ, चार वरनां इक्क आधार। हँ ब्रह्म मेल मिला लिआ, पारब्रह्म करे प्यार। पंज तत्त काया नाउँ ना कोई वड्डिआ लिआ, निरगुण नाउँ होए जैकार। सरगुण तेरा पन्ध मुका लिआ, लेखा चुक्कया गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे साचा वर, तरनी तरन आप करतार। (१०—४०)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

१२) सतिगुर शब्द कहे गुरमुखो तत्तां दे कदे ना बणिओ पुजारी, पूजा कम्म किसे ना आईआ। जद मन्नो ते मन्नो जोत निरँकारी, जो घट घट रिहा समाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बरां सिफ्तां विच्च सिफ्त लिखी भारी, भारत वरश दए गवाहीआ। पर सतारां हाढ़ कहे अज्ज उह दिहाढ़ी, जिस दा राह चार जुग रहे तकाईआ। पंजे प्यारे ख़बरदार हो जाओ एस नूं कर लउ गिरफ्तारी, जेहड़ा गिफ्ट विच्च नाम कलमे दे के सभ नूं दए परचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। (२१—१०४१)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

१३) सरगुण तेरा साचा राग, निरगुण नाम वडयाईआ। सरगुण तेरा सच सुहाग, हरि कन्त कन्तूहल अखवाईआ। सरगुण तेरा सच समाज, हरि संगत मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वरवाईआ।

साचा मार्ग विच्च संसार, निरगुण सरगुण आप चलाइंदा। गुरमुख सज्जण कर त्यार, आपणी बूझ बुझाइंदा। काया हट्ट खोलु किवाड़, वस्त अनमुल वरवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा।

सरगुण तेरा साचा रूप, एका एक जणाईआ। पुरख अबिनाशी शाहो भूप, देवे नाम वडयाईआ। तेरा नगारा जगत कूट, दह दिशा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा बंधन पाईआ।

सरगुण तेरा सच्चा रूप, गुरमुख गुर गुर आप सलाहिंदा। जन्म जन्म मिटे दुक्ख, दर्दी दर्द वंडाइंदा। आप उठाए आपणी कुक्ख, साची गोद बहाइन्दा। झूठी मेटे तृस्ना भुक्ख, सांतक सति कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि मेल मिलाइंदा।

सरगुण तेरा रूप गुरसिख, गुर गुर बूझ बुझाईआ। सच दुआरिउँ मिले भिख, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। पूरब जन्म दी मेटे रेख, अग्गे लेखा दए समझाईआ। नेत्र लोचण साचे वेख, आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। ..... (१६ माघ २०१८ बिक्रमी मलक कैंप)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

१४) सरगुण कहे निरगुण मेला, मेलणहार आप निरँकार। निरगुण कहे सरगुण चेला, चेला गुर रूप अवतार। सरगुण कहे निरगुण सज्जण सुहेला, आदि जुगादी मीत मुरार। निरगुण कहे सरगुण सोहे वेला, थित वार ना कोई विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल आपार।

निरगुण कहे सरगुण बल, बलधारी आप जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जोत जावां रल, आपा आप गवाइंदा। निरगुण कहे मैं आदि जुगादि अछल अछल्ल, मेरा भेव कोई ना पाइंदा। सरगुण कहे मैं तेरा दुआरा लैणा मल्ल, तुध बिन अवर ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल वरवाइंदा।

निरगुण कहे सरगुण साथ, सगला संग निभाईआ। सरगुण कहे निरगुण पूजा पाठ, अक्खर वक्खर पढ़ाईआ। निरगुण कहे मैं वसां हर घाट, घट घट डेरा लाईआ। सरगुण कहे मैनूं तेरी आस, इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाईआ।

सरगुण कहे निरगुण मीत, मिल मिल खुशी मनाईआ। निरगुण कहे सरगुण अनडीठ, दर तेरे सोभा पाईआ। आदि जुगादि अवल्लड़ी रीत, हरि साचा सच चलाईआ । सरगुण सुणाए सुहागी गीत, निरगुण आप अलाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ह़ाईआ।

निरगुण आपणा भेव खोल्ह़, सरगुण बूझ बुझाइंदा। देवे दरस दरस अनमोल, हरिजन आप जगाइंदा। काया मन्दर अंदर वसे कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। दिवस रैण परभात संध्धया करे चोल्ह़, आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी मेहर आप कराइंदा।

करे मेहर श्री भगवान, भगतन माण रखाईआ। साचे सन्तां देवे नाम निधान, निझ आत्म करे रसाईआ। गुरमुख सज्जण मेले आण, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। हरिजन मेला दो जहान, एथ्थे ओथ्थे होए सहाईआ। एका नाद शब्द धुंनकान, बण वैरागी आप सुणाईआ। गुरसिख सोहँ ढोला गाण, घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण मेला चाओ चाईंआ।

सरगुण मेला चाओ घनेरा, घर घर खेल कराया। निरगुण वसणहारा दूर नेरा, नेरन नेरा आपणा पन्ध मुकाया। कलिजुग अन्तम बन्ह़े बेड़ा, सिर आपणे भार उठाया। हरिजन तेरा वसे खेड़ा, बंक दुआरा आप सुहाया । अन्तम करे हक़ निबेड़ा, निरगुण दाता बेपरवाहिआ। जम की फासी कट्टे जेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा होए सहाया।

तेरा सहाई सदा प्रभ, जुग जुग सेव कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लभ्भ लभ्भ, आपणा मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्त हो प्रगट, साची खेल वखाइंदा। भगत दुआरा खोल्ह़ हट्ट, एका वणज कराइंदा। गुरमुख लाहा लैण खट्ट, दूसर दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी नज़र आप उठाइंदा।... (१६ माघ २०१८ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

१५) बिआस कहे किरपा कर परवरदिगार, जलवागर तेरी वडयाईआ। कूक सुण मुहम्मद यार, चार यारी दए दुहाईआ। उम्मत उम्मती हाहाकार, नमाज़ां रोज़िआं विच्च दुहाईआ। मुहब्बत मिले ना किसे दवार, दर दरबार ना कोई वडयाईआ। खाली दिसे भंडार, हकीकत हक़ ना कोई वरताईआ। कायनात होई गवार, अकल अकलमंद ना कोई बणाईआ। गुप्त सुणे ना गुफ्तार, बातन दरस कोई ना पाईआ। बाहरों वेखदे जगत मज़ार, निरगुण मीआं नज़र किसे ना आईआ। मुखातब करे ना कोई संसार, तआकब हक़ ना कोई जणाईआ।

चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ार, साचा सबक ना कोई पढ़ाईआ। चौदां सदीआं दा इज़हार, खेल वेख दुखीआं दे दिलदार, बेदर्दी आपणी दया कमाईआ। वेला वक्त विचार, कूड़ी क्रिया वेख संसार, साचा चन्द ना कोई उजिआर, नूराना नूर ना कोई चमकाईआ। तेरे चरन कँवल निमस्कार, बिआस कहे मैं रोवां ज़ारो ज़ार, गोबिन्द दिसे किसे ना धार, गुरमुख थोड़े पावण सार, लक्ख चुरासी गूड़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन लाए कोई ना पार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रेम प्रीती अंदर पीआ प्रीतम हो के आपणे रंग रंगाईआ।
(२० १६७)

१६) आशक माशूक आए चौंह जुगीं, जुग चौकड़ी रही जस गाईआ। एह रमज़ किसे ना सुझी, बिन परमेश्वर पार ना कोई लंघाईआ। इक्क दूजे दे प्रेम पिच्छे पौंदे रहे लुडी, खुशीआं नाच नचाईआ। ख़ाहशां नाल असमाने चढ़ौंदे रहे गुड्डी, पतंग टुट्टी डोर हत्थ किसे ना आईआ। एस रमज़ नूं समझ सकी कोई ना बुद्धि, मत मतवाली राज़ समझ सकी ना राईआ। जिस दी प्रीती सभ नालों उच्ची, आशक माशूकां इशारे रही दृढ़ाईआ। उह प्रीती सभ नालों सुच्ची, सतिगुर हत्थ रखवाईआ। जगत प्रीती दर दर दी कुत्ती, बण सुआन घर घर फिरे भज्जे वाहो दाहीआ। बिन सतिगुर किरपा होवे लुच्ची, लुच्ची गुन्डयां नाल रलाईआ। बिन भगत तोड़ प्रीत किसे ना पुजी, सिल पूजस मर मर थक्की मात लोकाईआ। कबीर किहा एह गल्ल नहीं गुज्झी, पर्दा दित्ता खुल्ह़ाईआ। नानक किहा मेरी निरगुण नाल रुची, दर घर इक्को नज़री आईआ। जिस दवारे आशक माशूक अक्ख खोल़ सुरती विच्च कोई ना रुट्ठी, रुठ्ठ आपणा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। (१६-१००)

१७) रविदास कहे प्रभू बड़ा गम्भीर, गहर गवर अखवाइंदा। सृष्टी दिसे पंज तत्त सरीर, मोहे निरगुण निरवैर नज़री आइंदा। जिस दी मंज़ल चोटी इक्क अख़ीर, बिन कबीर चढ़ दरस कोई ना पाइंदा। रविदास कहे मेरा चोला वेख लीरो लीर, जिस दा सिँघासण पुरख अकाल इक्क वडिआइंदा। पंडत एहदे विच्च तेरी तकदीर, तदबीर हौली जिही समझाइंदा। तूं तक्क ला नाल नज़ीर, बेनज़ीर नज़री आइंदा। जिस ने मारी शब्द लकीर, कलम शाही संग ना कोई वखाइंदा। दर ठांडे हो अद्धीन, साहिब मस्कीन दया कमाइंदा। जल्वा नूरी इक्क रंगीन, रहमत बख्शिश सच सच वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। (१६—६३५)

१८) निरगुण रूप निराकारा, निरवैर हरि अखवाइंदा। निरगुण जोत नूर उजिआरा, नूर नुराना डगमगाइंदा। निरगुण वसे धाम नयारा, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण सिकदारा, शहनशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। निरगुण खेल करे अगम्म अपारा, सरगुण आपणी धार चलाइंदा। सरगुण रूप गुर अवतारा, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। धुर दरबार सच्ची सरकारा, धुर दी कार आप कमाइंदा। सच संदेसा हरि निरँकारा, गुर गुर बाण बाण लगाइंदा। नाद अनादी नाद जैकारा, अगम्म अगम्मड़ा आप प्रगटाइंदा। जुगा जुगन्तर सच सहारा, एका मंत्र नाम दृढ़ांइंदा। (१६ जेठ २०१८ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

१६) परदा गुरसिख जाए लथ्थ, हरि हरि साचा आप चुकाईआ। इक्क इकल्ला देवे वत्थ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। वसणहारा घट घट, घट घट अन्तर रूप दरसाईआ। जोत जगाए लट लट, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म वखाए साची खाट, साची सेजा सोभा पाईआ।

साची सेजा हरि नरायण, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। रसना कोई ना सके कहण, जो जन दर्शन पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बणे साक सज्जण सैण, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चुकाए लहण देण, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। (१६ जेठ २०१८ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२०) आपणा भेव चुकाए आप करतार, दूसर संग ना कोई रखाइंदा। निरगुण नूर खेल अपार, अलख अगोचर आप कराइंदा। अगम्म अगम्मड़ा हो त्यार, निरगुण आपणा आप धराइंदा। सचखण्ड दुआर खोलु किवाड़, शहनशाह आपणा आसण लाइंदा। थिर घर पाए आपे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी खेल आप कराइंदा।

आपणा खेल करे निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अजूनी रहित हो त्यार, अनभव प्रकाश कराईआ। साचे मन्दर जोत उजिआर, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ।

निरगुण रूप हरि निराकार, एका एक अखवाइंदा । थिर घर साचा कर त्यार, चरनां हेठ दबाइंदा। शब्दी शब्द शब्द आधार, पूत सपूता विच्च सुहाइंदा। पूत सपूता कर प्यार, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। साची वस्त वस्त वणजार, नाउँ अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा।

सचखण्ड निवासी भेव खोलू, एका करे जणाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, अनादी नाद सुणाईआ। साचे कंडे तोले तोल, तोलणहारा इक्क हो जाईआ। सच दुआरा देवे खोलू, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी दया कमाईआ।

निरगुण आपणी दया कमा, एका राह जणाइंदा। थिर घर दुआरा आप सुहा, घर साचे मेल मिलाइंदा। शब्द दुलारा आप उठा, साचा मोह वखाइंदा। हुक्मी हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव झोली पा, एका दर बहाइंदा। एका तत्त दए प्रगटा, त्रैगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा।

निरगुण खेल करे भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। तख्त निवासी वड मेहरवान, भूपत भूप रूप वटाईआ। शब्दी सुत सुत बलवान, बलधारी इक्क प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, साची गोदी गोद सुहाईआ। तिन्ने चेले कर परवान, चेला गुर रूप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ।

निरगुण वंडे साची वंड, भेव कोई ना पाइंदा। वसणहारा सचखण्ड, थिर घर वेख वखाइंदा। शब्दी शब्द साचा चन्द, निरगुण निरगुण आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा।

साचा भेव खोलू करतार, सचखण्ड बैठा साचा माहीआ। त्रैगुण अतीता कर त्यार, त्रै त्रै मेल मिलाईआ। एका रंग चाढ़े आपार, उतर कदे ना जाईआ। एका मन्दर सच मुनार, सति सतिवादी दए वखाईआ। विष्नूं अंदर अमृत धार, अंमिउँ रस आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हत्थ रखाईआ।

विष्नूं अंदर अमृत रस, निझर आप झिराइंदा। पारब्रह्म प्रभ अंदर वस, ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा। शंकर मेला हस्स हस्स, शब्द विचोला नाल रलाइंदा। त्रैगुण मेला नस्स नस्स, पंचम बंधन पाइंदा। लक्ख चुरासी मार्ग दस्स, साची घाड़त घड़न घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी कार कमाइंदा।

निरगुण कार करे अपार, आपणी धार चलाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। वंडे वंड अगम्म अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। सूरज चन्द कर उजिआर, मण्डल मंडप आप सुहाईआ। धरत धवल वेख अखाड़, जल बिंब आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

साचा खेल पुरख अगम्म, आदि जुगादि कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बेड़ा बन्नू, लक्ख

चुरासी खेड़ा आप वसाइंदा। करे खेल श्री भगवन, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। एका वस्त नाम धन, साचे हट्ट आप वकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा।

निरगुण वेस निराकार, निरधन आपणा खेल कराईआ। दाता दानी सच भंडार, सति सतिवादी आप वरताईआ। लक्ख चुरासी देवणहार, घर घर रिज़क पुचाईआ। एथ्थे ओथ्थे दए सहार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह खेल अपारा, हरि अपरंपर आप कराइंदा। निरगुण नूर कर पसारा, सरगुण वेस वटाइंदा। सरगुण रूप सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी बंधन पाइंदा। लक्ख चुरासी जोत उजिआरा, नूर नूराना डगमगाइंदा। घर घर अंदर खोल्ह किवाड़ा, हरि आपणा आसण लाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दिस किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सच्चा झूला आप झुलाइंदा। लोआं पुरीआं आप अखाड़ा, एकँकारा वेख वखाइंदा। लेखा जाणे पुरख नारा, नर नरायण वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा ।

आपणी कल कर प्रतक्ख, आपणा भेव चुकाईआ। निरगुण सरगुण हो हो वक्ख, दोए दोए धार समझाईआ। शब्द अनाद वज्जे घट घट, अनरागी राग अलाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, जोत निरञ्जण विच्च टिकाईआ। करे खेल शाहो शाबाश, शाह पातशाह वड्डी वडयाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आप सुहाईआ। निरगुण सरगुण करे पूरी आस, इच्छा पूर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा राह चलाईआ।

सरगुण मार्ग आपे ला, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़त घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जेरज अंडज उत्भुज सेतज वंड वंडा, चारे खाणी बंधन पाइंदा। चारे बाणी राग सुणा, आपणा भेव चुकाइंदा। चारे जुग वंड वंडा, एका हुक्म सुणाइंदा। चारे वरन मात प्रगटा, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश नाउँ धराइंदा। चारे कूट फेरा पा, आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाइंदा।

साची धारा हरि करतार, आदि जुगादि चलाईआ। निरगुण सरगुण हो त्यार, त्रैभवण धनी वेस वटाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दे अधार, एका बंधन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

करे खेल पुरख समरथ, इक्क इकल्ला वड वडयाईआ। निरगुण चलाए सरगुण

रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जुग जुग महिमा अकथ्थना अकथ्थ, एका शब्द करे पढ़ाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, आपे वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल वखाईआ।

निरगुण सरगुण साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। पारब्रह्म सूरा सरबंग, घर साचे सोभा पाइंदा। आदि जुगादि एका मरदंग, जुग करता आप वजाइंदा। घर घर वेख साचा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च रखवाइंदा। गीत सुहागी गाए छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा।

आपणा खेल श्री भगवान, निराकार निरँकार आप कराईआ। सरगुण वखाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर परवान, मेल मिलाए साचे थाईंआ। बंधन पाए गोपी काहन, साचे मण्डल रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वडयाईआ ।

सरगुण अंदर सतिगुर धार, गुर गुर आप प्रगटाइंदा। जोती जोत कर पसार, जोती जोत मेल मिलाइंदा। शब्दी शब्द जैकार, नाम जैकारा इक्क सुणाइंदा। अमृत अमृत ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण धार आप समझाइंदा।

सरगुण धार पुरख अकाल, निरगुण आप बणाईआ। आदि आदि हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वडयाईआ।

सरगुण देवे माण, हरि वड्डा वड वडिआइंदा। खेले खेल दो जहान, दोए दोए रूप धराइंदा। दाता दानी वड मेहरवान, आपणा रूप वटाइंदा । ब्रह्मा देवे इक्क ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। चारे वेद कर प्रधान, चारे कुण्ट वंड वंडाइंदा। चारे जुग इक्क निशान, एका घर झुलाइंदा। चारे बाणी कर प्रधान, चारे खाणी आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल महान, आदि पुरख आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा।

आपणा पड़दा देवे लाह, हरि वड्डा वड वडयाईआ। जुग जुग बणे मात मलाह, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता लिआ हंढा, द्वापर अंग रखवाईआ। कलिजुग अन्त वेखण दा चाअ, पारब्रह्म प्रभ खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी गए विहा, थिर कोई रहण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध रहे मुका, बण बण पान्धी राहीआ। गुर अवतार सेव कमा, गए मुख छुपाईआ। पीर पैगम्बर डौरू डंक वजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराईआ।

निरगुण खेल अपर अपार, हरि साचा सच कराइंदा। लेखा जाणे जुग चार, जुग चौकड़ी फोल फुलाइंदा। नाता जोड़ गुर अवतार, पुरख बिधाता बंधन पाइंदा। खेले खेल परवरदिगार, पीर पैगम्बर आप वडिआइंदा। मुकामे हक़ सांझा यार, नबी रसूल आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण आपणे रंग समाइंदा।

निरगुण नूर पुरख अकाल, इक्क इकल्ला वड वडयाईआ। आदि जुगादि खेल कमाल, भेव कोई ना पाईआ। चरनां हेठ दबाए काल महांकाल, जुग जुग हुक्म सुणाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, गुर गुर रूप वटाईआ। बाणी बोध शब्द ज्ञान, जीव जंत करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेख पुरान, वेद विदाता रूप वटाईआ। भगतन मेला श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ।

साचा मार्ग निरगुण धार, सरगुण वेख वखाईआ। रूप धराए गुर अवतार, मातलोक लए अंगढ़ाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटार, चंड परचंड हत्थ उठाईआ। तीर तरकश फड़ कमान, जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप वखाईआ। पीर पैगम्बर वेखे मार ध्यान, मिहबान बीदो निगहबान बी खैर या अल्ला इल्लाही नूर आप अखवाईआ। करे खेल श्री भगवान, निरगुण सरगुण देवे दान, लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेतज आपणी रचन रचाईआ। करे प्रकाश रव सस सूरज चन्द भान, दाता जोधा सूरबीर श्री भगवान इक्क वखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता इक्क इकल्ला, वसणहार सच महल्ला, दो जहानां आपणा खेल कराईआ।

दो जहानां खेल अपारा, हरि निरँकारा आपणा आप कराइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, लोकमात हो उजिआरा, लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपणा भेव चुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करे पार किनारा, वेखे विगसे वारो वारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। .....(१६ माघ २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२१) जोती जाता श्री भगवान, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर सतिगुर रूप वटाइंदा। भगतन देवे इक्क ज्ञान, आपणी बूझ बुझाइंदा। सन्तन देवे नाम दान, नाम नामा आप अखवाइंदा। गुरमुखां वखाए सच निशान, धर्म निशाना इक्क रखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बणाए चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़े आपणे धंदे लाइंदा। (१६ जेठ २०१८ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२२) सरगुण तजिआ आपणा रंग, निरगुण रूप वटाया। निरगुण वस्सया सरगुण आत्म सेज पलंघ, सच सिँघासण सोभा पाया। सरगुण अंदर वज्जे मरदंग, निरगुण निरवैर रिहा वजाया। गीत अगम्मी गाए छन्द, सो पुरख निरञ्जण आप अलाया। हँ ब्रह्म जणाए परमानंद, निझ आत्म आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सोहँ रूप वटाया। (१६ जेठ २०१८ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२३) महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरगुण निरगुण रूप एका जोती आपे आप जाणदा। निरगुण रूप निर निरवैर है। सरगुण सरूप सतिगुर पूरा विच्च मात हाज़र हज़ूर है। निरगुण रूप साचा नूर, इक्को शब्द तूर है। सरगुण रूप जगत अनूप, सतिगुर पूरा सर्ब कला भरपूर है। दोवें खेल करे हरि वड्डा शाहो भूप एका एक सति सरूप है। जगत बन्ने साची धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जोत जगाई, सृष्ट सबाई आप भुलाई, गूड़ी नींद सवाई। (१३ चेत २०११ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२४) सरगुण रूप सच्ची सरकारा। निरगुण रूप जोत अकारा। सरगुण रूप दिस्से संसारा। निरगुण रूप शब्द धुन देवे धुनकारा। सरगुण रूप दरस परस जीव जंत उधरे पारा। निरगुण रूप हरि साचे कन्त, विरला मिले भगत प्यारा। सरगुण रूप आवे जावे मात रहावे वारो वारा। निरगुण रूप एका दस्से धारा। अट्टल एका एक निरँकारा। सरगुण रूप हरि खेल अपारा। वल छल कर जगत भुलावे, जुगा जुगन्ती साची कारा। निरगुण रूप इक्क अचल निराहार निराधारा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी खेल आप कराए भगत उपजाए जगत वड्डिआए, एका मेल मिलाए, दूई द्वैती जगत नाता तुट्टे आत्म हँकारा। (१२ भादरों २०११ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२५) निरगुण रूप अपार, किसे ना जाणिआ। निरगुण रूप अपार, खेल महानया। निरगुण रूप अपार, किसे हत्थ ना आवे राजे राणिआ । निरगुण रूप अपार, खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरानया। निरगुण रूप अपार, ना कोई मन्ने जीव निधाने, वसे साचे घर सच टिकाणिआ। निरगुण रूप अपार, किसे दिस ना आए दर, सच महल्ल ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार, आपे करे वल छल, अछल अछल्ल इक्क अखवा रिहा। निरगुण रूप अपार, आपे वसे जल थल, थल जल आप समा रिहा। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धार।

निरगुण रूप अपार, जगत अमोल्लया। निरगुण रूप अपार, किसे ना तोल्लया। निरगुण रूप अपार, साचे दर दवारा किसे ना खोल्लया। निरगुण रूप अपार, आणा जाणा आपणे घर साचे सर, शब्द भंडारा आपे एका खोल्लया। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग आपे मेलया।

निरगुण रूप अपार अन्धानया। निरगुण रूप अपार, ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार, एका एक एक भगवानया। निरगुण रूप अपार, आपे वसे आपे जाणे सच टिकाणया। निरगुण रूप अपार, लक्ख चुरासी बणत बणाए, साची वस्त इक्क टिकाए, पवणी शब्दी जोती नूर महानया। निरगुण रूप अपार, वरन गोती ना कोई जणाए, मात पित ना गोद उठानया। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, एका आपणा रंग आपे आप पछानया।

निरगुण रूप अपार, अव्वलड़ी धारया। निरगुण रूप अपार, इक्क अगम्मड़ी साची जोत अकारया। निरगुण रूप अपार, दिसे ना किसे काया खलड़ी, साचे मन्दर आप सुहा रिहा। निरगुण रूप अपार, सद अतोल कदे ना तुलड़ी, सृष्ट सबाई आप तुला रिहा। निरगुण रूप अडोल, लक्ख चुरासी आप डुला रिहा। निरगुण रूप अपार, हरि हरि वड्डा शाहो भूप, जोती नूरा सति सरूप, सच सिँघासण एका एक डगमगा रिहा।
(५ माघ २०११ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२६) निरगुण रूप अपार, सच घर वासिआ। निरगुण रूप अगम्म अपार, वेख वखाणे सच मण्डल साची रासिआ। निरगुण रूप अगम्म, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चंम, आवे जावे ना विच्च गरभासिआ। निरगुण रूप अगम्म, करे कराए आपणा काम, हरि साजन साचा शाहो शाबासिआ। निरगुण रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूर कर प्रकाश, गुरमुख काया मन्दर अंदर करे वासिआ।

निरगुण रूप अगम्म, ना कोई नेत्र नीर वहाए छंम छंम, हरख़ सोग सोग हरख़ कदे ना आसीआ। ना मरे ना जाए जम्म, ना कोई माता गोद उठासीआ। ना कोई पवण स्वासी लए दम, आप आपणे विच्च समासीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मन्दर अंदर हरि साचा डेरा रिहा लगासीआ।

निरगुण रूप अगम्म, हरि बलवानया। निरगुण रूप अगम्म जीव निधानया। निरगुण रूप अगम्म, सच धुर फ़रमाणिआ। निरगुण रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी आणिआ। (६ जेठ २०१२ बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

२७) निरगुण रूप अपार, नूर नुरानया। सरगुण खेल करतार, पेखा भेख विच जहानया। निरगुण रूप अपार, नर नरायण नर किसे पछानया। निरगुण रूप अपार, काया जोती जगे इक्क भगवानया। निरगुण रूप अपार, आपे जाणे आपणी सार, आदि अन्त ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार शब्द मिले वस्त अपार, देवे हरि किरपा कर वाली दो जहानया। दोहां घरां इक्क प्यार, आपे नारी पुरख भतार, साची सेजा पैर पसार, सुत्ता रहे गुण निधानया।

निरगुण रूप अपार, भगत अमोल्लया। सरगुण रूप अपार, पुरख अबिनाशी अंदरे अंदर बोलया। निरगुण रूप अपार, भेव किसे ना खोल्लया। सरगुण रूप अपार, जोती जगे अपर अपार, दसम दवारी पड़दा खोल्लया। निरगुण रूप अपार, सरगुण बन्ने साची धार, शब्द जोती विच्च टिकाए, आप आपणी दया कमाए, दूसर किसे दिस ना आए, गुरमुखां पड़दा आपे खोल्लया।

निरगुण रूप अपार, सदा निरवैरया । ना कोई जाणे जंत गवार, ना कोई करे सन्त अधार, झूठे वहण जगत वहा रिहा। नर नरायण पावे सार, दर घर साचे एका बहिण, मिले मेल कन्त भतार । दरस वेखे तीजे नैणा, आत्म खोले बन्द किवाड़, नाता तुटे भाई भैणां, तत्ती वा ना लगे हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द तन पहनाए, नेड़ ना आए मौत लाड़। (१२ जेठ २०१२)

२८) निरगुण रूप अगम्म किसे ना जाणिआ। सरगुण साचा पए जम्म, सतिगुर साचा मात वखाणिआ। निरगुण रूप अगम्म, ना कोई हड्ड मास नाड़ी चंम, नूरो नूर करे अकारया। सरगुण रूप मानस देही एका तम, पवण स्वासी लए दम, पंज तत्ती बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण भेख कर, काया चोला माया उहला आपणा भेव छुपा रिहा।

काया चोली हरि बणाईआ। शब्द डोली नाल रखाईआ। आपे बणया साची गोली, जोती नारी जिस परनाईआ। काया कपड़ पड़दे रिहा खोली, झूठा भार जो उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण भेख धर, जन भगत उधारे वारो वारे थाउँ थाईंआ।

सरगुण साची धार, शब्द अधारया। निरगुण रूप अपार, सर्ब पसारया। जोती जामा भेख नयार, दोहां दिसे सदा बाहरया । जन भगतां मीत मुरार, प्रगट होए दसम दवारया। खड़ा रहे पहरेदार, शब्द फड़ तेज कटारया।नेड़ ना आए ठग्ग चोर यार, काम क्रोध लोभ मोह हंकारया। गुणवन्ता गुण रिहा विचार, साधन सन्ता पाए सार, साचा दर आप सुहा रिहा। बेमुख जीव माया पाए बेअन्ता, भरम भुलेखे जगत भुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सरगुण निरगुण भेख कर, गुरमुख सोया मात जगा रिहा। (३० हाढ़ २०१२ बिक्रमी)

२०) गुर शब्द भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेटे मिटाईआ । कलिजुग अन्तम पैंडा मुक्कणा, लोकमात रहण ना पाईआ। लक्ख चुरासी बूटा सुक्कणा, हरया सिंच ना कोई कराईआ। गुरमुख विरला लोकमात फुट्टणा, फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। जिस सति पुरख निरञ्जण गोदी चुकणा, तिस मिले माण वडयाईआ। कूड़ कुड़यारां मिले ना अन्तम लुकणा, चार कुण्ट थाउँ नज़र कोई ना आईआ। धर्म राए फड़ फड़ कुसणा, चित्रगुप्त लेख वखाईआ। श्री भगवान बिन भगतां सभ दे नालों रुस्सणा, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। दो जहान निरगुण चरनी झुकणा, सरगुण मिले ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा समझाईआ । (१३-७४२)

३०) बीस कहे मैं निरगुण सरगुण सिफ़र, सफ़ा ज़ात हसती नज़र किसे ना आईआ। आदि आदि करदा रिहा फ़िकर, फ़िकरा आपणा नाम जणाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा ज़िकर, भेव अभेद खुल्ह़ाईआ । नित नवित्त निरगुण सरगुण रिहा नितर, ज़ीरो रूप दए वडयाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेल करदा रिहा विछड़, विछोड़ा आपणा आपे पाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब विच्च बणया रिहा भिटड़, सति असति वंढु वंढुाईआ। लुक लुक खेल करदा रिहा अनडिठड़, निरवैर आपणी कार कमाईआ। गुर अवतारां बणदा रिहा मित्र, मीत मुरारा आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चढ़ के बैठा चोटी सिखर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।

बीस कहे निरगुण सरगुण मेरी दलील, भेव आपणा आप छुपाया। आदि जुगादी बणया रिहा छैल छबील, रूप रंग रेख ना किसे समझाया। वसदा रिहा उप्पर धारों नील, निर्मल दीआ जोत डगमगाया। जुग चौकड़ी रक्खया ना कोई वकील, सच वकालत आप कमाया। नित नवित्त करी ना कोई अपील, आपणा हाल ना किसे सुणाया। बैठा रिहा बण के आप असील, सति सरूपी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाया।

बीस कहे निरगुण सरगुण मोह, मुहब्बत इक्को इक्क रखवाईआ। आदि आदि प्रगट हो, जोत जोत जोत रुशनाईआ। महल्ल अट्टल एका सुहाए सो, सो साहिब बेपरवाहीआ। निरगुण निराकार निरँकार हो निर्मोह, जुग चौकड़ी आपणी धार चलाईआ। सरगुण संगी हो के जाए छोह, शहनशाह आपणा अंग लगाईआ। दुरमत मैल देवे धो, धोवणहार इक्क अखवाईआ। कर प्रकाश साची लो, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। लक्ख चुरासी काया मन्दर लए टोह, घट घट आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ।

बीस कहे मैं एका रूप, अनूप दए वडयाईआ। आदि जुगादी मेरा भूप, शहनशाह

बेपरवाहीआ। सति सतिवादी सति सरूप, सति पुरख निरञ्जण नाउँ प्रगटाईआ। हुक्म संदेसा धार अगम्मी चार कूट, राग नाद हर घट थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ।

दूआ कहे सुण सिफ़रे मीत, सज्जण सच दिआं दृढ़ाईआ। मैं निरगुण सरगुण हो चलाई तेरी रीत, तेरा राह वखाईआ। सेवक बण के गाया गीत, नाम निधान प्रगटाईआ। राह चलाया मन्दर मसीत, शिवदवाले मट्ठ सुहाईआ। माण रखाया हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ।

सिफ़रा कहे सुण निरगुण सरगुण सज्जण, सच साची दिआं जणाईआ। मेरे अंदर वड़ीं आपणा परदा कज्जण, बाहर सहाई नज़र कोई ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरे अंदर बहि के सजण, घर साचे डेरा लाईआ। नित नवित्त रहे लगन, मूरत अकाल रूप वटाईआ। तत्त सरीर कोई ना बदन, ख़ाक माटी ना कोई रखाईआ । हवा पाणी ना कोई अगन, सुगंध रूप ना कोई जणाईआ। नाद ताल ना कोई वज्जण, राग नाद ना कोई सुणाईआ। निरगुण सरगुण हो के कर के आवें आपणा हज्जन, बण हाजी फेरा पाईआ। अन्त कोई ना रक्खे तेरी लज्जन, मुड़ मेरे घर नूं आईआ। सिफ़रा कहे मैं आदि जुगादि सभ दा पड़दा कज्जन, मेरा अंक ना कोई बणाईआ। इक्क नौं मैनूं सद्दण, उच्ची कूक कूक अलाईआ। आ मीत साचे सज्जण, तुध बिन साड्डी सार कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा समझाईआ।

निरगुण सरगुण कहे सुण सिफ़र सुण सिफ़र सुल्तान, साची सच दिआं दृढ़ाईआ। सरगुण बिना कौण झुलाए तेरा निशान, कवण देवे वडयाईआ। कवण गाए तेरा गान, कवण राग अलाईआ। कवण सुहाए मकान, कवण आसण वखाईआ। कवण मंगे देवे दान, कवण झोली रिहा भराईआ। कवण धरे ध्यान, कवण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ।

सिफ़रा कहे निरगुण सरगुण तेरा भुलेखा, भरम आपणा दए कढ्ढाईआ। अन्तम किसे दा कोई ना रहे लेखा, दो जहान रंग नज़र कोई ना आईआ। निरगुण सरगुण खेल खेडा, खलाड़ी आपणी कार कमाईआ। आपणा मार्ग आपे वेखा, वेखणहार आप हो जाईआ। अन्तम मेरे अंदर वड़ के सभ दा मुक्के लेखा, निरगुण पिछला सर्ब मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ।

निरगुण सरगुण कहे सिफ़र सुल्तान, तेरे अग्गे इक्क अज़ीईआ। साचा भेव दस्स महान, अनभव आपणा भेव चुकाईआ। कवण खेल करे प्रधान, प्रधानगी आपणे हत्थ रखाईआ। उच्ची कूक कहे मेहरवान, साचा सोहला नाम जणाईआ। जुग चौकड़ी खेले विच्च जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग देवे दान,

दाता दानी आप हो जाईआ। अन्त निरगुण सरगुण दोहां दा मिटे निशान, तत्त नज़र कोई ना आईआ। बिन सरगुण कोई ना देवे जा ज्ञान, साची सिख्या ना कोई पढ़ाईआ। इक्को वार होवां आप मेहरवान, मेहर आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा जणाईआ।

निरगुण सरगुण कहे प्रभ खेल दस्स, नर हरि की तेरी वडयाईआ। सिफ़र धार किव रिहा वस, रूप रंग नज़र कोई ना आईआ। कवण बिध देवें रस, रस अमृत आप चवाईआ। कवण खेल करें हस्स हस्स, आप आपणा पड़दा लाहीआ। कवण पन्ध मुकाइें नस्स नस्स, बण पान्धी फेरा पाईआ। कवण राग गाएं जस, कवण सिफ्त आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

निरगुण सरगुण सुणो हरि नाद, अनादी आप जणाइंदा। सिफ़रा खेल आदि जुगादि, जुग चौकड़ी धार बन्नाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लाए शाख़, कली कली मात महकाइंदा। नव नौं चार वेख वाट, पान्धी पिछला पन्ध मुकाइंदा। निरगुण सरगुण खेल तमाश, गुर अवतार नाच नचाइंदा। पीर पैगम्बरां दे साथ, सच मलंघ रूप वटाइंदा। अन्तम सरगुण निरगुण तारे आपणे घाट, पत्तण इक्को इक्क जणाईआ। नेड़े रक्खे आपणी वाट, सच संदेसा दए जणाईआ। अन्तम गुर मंगे दात, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। ज़ीरो रूप कमलापात, सिफ़रा आपणा घर सुहाईआ। जिस रचना रची आदि, सो अन्त वेख वखाईआ। खेलणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक नाच नचाईआ। भेव अभेदा आपणा खोल्हे राज़, राजक रहीम वड वडयाईआ। निरवैर हो रचाए काज, करता आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण होया रिहा मुहताज, बिन सरगुण निरगुण कम्म किसे ना आईआ। लोकमात नाम सति दे आवाज़, अन्तम आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ।

निरगुण सरगुण सुण सिफ़रा काज, हरि करता आप जणाइंदा । जुग चौकड़ी चलाए जहाज़, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। लक्ख चुरासी मार आवाज़, सोई सुरती आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण दे दे दाज, साची वस्त नाम गठड़ी सीस चुकाइंदा। अन्तम खेल करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कार कमाइंदा। निरगुण सरगुण पूरी करे आस, सरगुण शेर सिँघ नाउँ धराइंदा। अन्तम शेर सिँघ होया नास, सिफ़रा आपणा आप वखाइंदा। नज़र ना आए पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज ना कोई खुजाइंदा। आपे जाणे आपणी आस, आसा आपणे घर रखाइंदा। निरगुण नूर ज़हूर कर प्रकाश, परकाश्त आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूए नाल सिफ़र मिलाइंदा।

दूए नाल सिफ़रा मिल, मिलणी हरि कराईआ। पंज तत्त ना कोई दिल, दलील विच्च ना कोई रखाईआ। बजर कपाट ना कोई सिल, नव दर ना राह तकाईआ। पूजा पाठ ना कोई छिल, धूणी अगन ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सिफ़रा कहे मेरा मज़मून, मुज़कर मवनस दोवें ना सके बणाईआ। निरगुण सरगुण मन्नदे रहे मेरा कानूंन, आपणा कानूंन मैनूं ना सके समझाईआ। दर दरवेश बणदे रहे ममनून, मुशकल आपणी हल्ल कराईआ। मन्नदे रहे कन्त कन्तूहल, नर हरि नरायण इक्क अखवाईआ । सरगुण हो के चढ़दे रहे सूली सूल, तन ख़ाकी दर्द वंडाईआ। मेरा इक्को नाम इक्को शब्द इक्को हुक्म माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण सरगुण थापया असूल, असलीयत थोड़ी थोड़ी समझाईआ। दरगाह साची सभ दे नंबर लौंदा रिहा रोल, रूल आपणा इक्क बंधाईआ। चार जुग जो आ के गए भूल, भुलयां रिहा जगाईआ। निरगुण सरगुण दोहां नूं देणा पए मसूल, मसला आपणा रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सिफ़रा खेल कराईआ।

सिफ़रा कहे मैं धार शेर, सिँघ नज़र किसे ना आईआ। लोकमात वेस पहली वेर, वेरवे नाल आप समझाईआ। चार जुग हक़ हकीकत कोई ना सक्कया नबेड़, फ़ैसला मेरे उत्ते रखवाईआ। कोई छड्ड के गिआ नदेड़, आप आपणा झोली पाईआ। कोई मंगदा गिआ मेहर, दोए जोड़ सरनाईआ। कोई चरनी होया ढहि ढहि ढेर, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। कोई कट्टदा गिआ गेड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मात हंडाईआ। कोई बणदा गिआ दलेर, होका हक़ हक़ जणाईआ। कोई करदा गिआ नखेड़, श्री भगवान तार समझाईआ। कोई बन्नदा गिआ बेड़, चप्पू इक्को नाम जणाईआ। कोई करदा रिहा देर, दूर दुराडा आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा समझाईआ।

आपणा लेखा दस्सां की, करनी समझ किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरे सहारे रिहा जी, जीवण जुगत जगत मिली वडयाईआ। नाउँ निधान गुर अवतार बीज के गए बीअ, फल लोकमात हत्थ किसे ना आईआ। आदि पुरख अपरंपर स्वामी जिस रखवाई नींह, सो अन्तम महल्ल दए सहाईआ। मेहरवान किरपानिध आपे जाए थी, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। लेखा जाणे अगन पवण हवन घृत घी, सुगंधी आपणी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए समझाईआ।

निरगुण सरगुण सिफ़रा सिफ्त, साहिब सही सलामत सुल्लाकुल आप जणाइंदा। ला महिदूद हक़ महिबूब सच अरूज हो ग्रिफ्त, ग्रिफ्तारी आपणी आप कराइंदा। चार जुग दी लिखी पूरी करे लिखत, लख़ते जिगर गोबिन्द वेख वखाइंदा। वाक इतफ़ाक भविख्त, इत आदि पूर कराइंदा । वेखणहारा दोज़ख़ बहिश्त, नरक स्वर्ग खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जिन्नां लाया आपणा इशक, आशक माअशूक गंढु पवाइंदा । सिफ़रा हो के ना जाए तिलक, क्यों, आपणा रूप ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धार हरि करतार कर प्यार गोबिन्द दुलार विच्च संसार पंचम हाढ़ वदी सुदी नाल ना कोई रलाइंदा। (५ हाढ़ २०२० बिक्रमी)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

३१) निरगुण सरगुण कहे खेल बलवान, बलधारी आप कराइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। दो जहानां धर्म निशान, निरगुण सरगुण आप वखाइंदा। साचा नाम कर परवान, परवाना आपणा नाम समझाइंदा। शब्दी देवणहार ज्ञान, नाद अनाद धुन वजाइंदा। वसणहार सच मकान, मकाम इक्को इक्क वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण संग रखवाइंदा।

निरगुण सरगुण धुर दी धार, सिफ़रा सच सच समझाईआ। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त अपार, गावत गा गा शुकर मनाईआ। रहबर बण बण विच्च संसार, साबर सिख्या गए समझाईआ। कादर करता खेल नयार, नर हरि नरायण आप कराईआ। वसणहारा सभ तों बाहर, साची करनी आप कमाईआ। हरि करनी अन्त ना पारावार, बेअन्त बेअन्त जणाईआ। बेअन्त हो करतार, रूप रंग रेख ना कोई रखवाईआ। रूप रंग तों वस्सया बाहर, नूर ज़हूर इक्क रुशनाईआ। नूर ज़हूर एका धार, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण आपणे विच्चों कर उजिआर, अन्त आपणे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो सिफ़रा रिहा वडयाईआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अपारा, नज़र किसे ना आईआ। इक्क नौं लै सहारा, सद आपणा संग रखवाईआ। दर दरवेश मंगदे रहण भिखारा, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। कवण वेला प्रभ करे प्यारा, प्रीती साचे नाल निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ।

निरगुण सरगुण खेल दो, निराकार साकार वड्डी वडयाईआ। जोती जोत प्रकाश्त लो, प्रकाशवान आप उपाईआ। सति सरूप धुरदरगाही सो, साहिब सुल्तान वड्डी वडयाईआ। पुरख अकाल आपणे जिहा आपे हो, आप आपणी कल रखवाईआ। सरगुण बंधाए साचा मोह, निरगुण मेला मेल मिलाईआ। सरगुण निरगुण ढोआ देवे ढो, तत्तव तत्त कर कुड़माईआ। अन्तम लेखा रहे ना को, सरगुण निरगुण नज़र कोई ना आईआ। जो आवत सो जावत रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अनोखा, आकल अकल विच्च ना कोई लिआईआ। सचखण्ड ना मेरा कोठा, थिर घर ना कोई सुहाईआ। निरगुण नूर ना मेरी जोता, जोती जोत ना कोई रुशनाईआ। नाद धुन ना मेरा होका, राग अनराग ना कोई अलाईआ। दर दुआर ना कोई ओटा, हिरस हवस ना कोई रखवाईआ। आदि जुगादि इक्को होता, बिन एके रूप वखाईआ। सिफ़रा रूप सर्ब मैं सोता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ।

सिफ़रा कहे सच संदेस, सति सति जणाईआ। सिफ़रिउँ बणे एका एक, एकँकार

बेपरवाहीआ। एकँकार अगम्मी टेक, शाह पातशाह आप समझाईआ। एका लिखे आपणा लेख, लेखा लिखत समझ सके ना कोई राईआ। निरवैर हो के धारे भेख, अनभव प्रकाश, कराईआ। सरगुण बख्शे साची टेक, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वडयाईआ।

सरगुण कहे मैं एका ज़ात, दूआ नाउँ जगत वडयाईआ। एका कहे मैं पुरख समराथ, दूजी कुदरत नाल रलाईआ। कुदरत कहे मेरा रघनाथ, रहबर नज़र किसे ना आईआ। रहबर कहे मेरा सगला साथ, साचा संग निभाईआ। सरगुण कहे मेरी निरगुण गाथ, निरगुण कहे मेरी सरगुण सच पढ़ाईआ। सिफ़रा कहे मैं देवां दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। सरगुण कहे मैं गावां गाथ, ढोला राग अलाईआ। निरगुण कहे मैं बंधां नात, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। सिफ़रा कहे मैं पूरी करां आस, आसा आसा नाल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वडयाईआ।

निरगुण सरगुण दोवें रहे पुच्छ, सिफ़रे की तेरी वडयाईआ। तेरे कोल नहीं कुछ, वस्त नज़र कोई ना आईआ। तेरे अन्तर असीं रहे लुक, परदा इक्को ओढन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच सच समझाईआ।

सिफ़रा कहे मेरा निरगुण रूप, सिफ़रिउँ एका रूप वटाइंदा। एका कहे मेरा सरगुण सूत, ताणा पेटा इक्क वखाइंदा। नाता जोड़ पंज तत्त कलबूत, काया कण्पड़ डेरा लाइंदा। नाउँ प्रगटा पंज भूत, भेव अभेद आप छुपाइंदा। लक्ख चुरासी चार कूट, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। नाता जोड़ जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया गंढु पवाइंदा। निरगुण सरगुण हो के देवां सच सबूत, रूप अनूप इक्क धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निरगुण सरगुण मंग मंगाइंदा।

निरगुण सरगुण दस्से आप, आपणा भेव चुकाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, बंधप नज़र कोई ना आईआ। ना कोई मज़हब ना कोई ज़ात, दीन शरअ ना कोई वखाईआ। ना कोई पत्तण ना कोई घाट, किनारा नज़र ना कोई टिकाईआ। ना कोई पान्धी ना कोई वाट, ना कोई पैंडा रिहा मुकाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्द ना कोई चमकाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई सिफ्त करे पढ़ाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सर सरोवर ना कोई नहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए जणाईआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अपारा, सच सच सच वडयाईआ। सिफ़रिउँ होया निरगुण धारा, निरगुण एक एक अखवाईआ। इक्क एक दा कर पसारा, पसर पसारी वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी ला अखाड़ा, गोपी काहन नचाईआ। चार जुग दा जगत विहारा, गुर अवतार वंड वंडाईआ। पीर पैगम्बर दे सहारा, सगला संग निभाईआ। राग नाद बोल जैकारा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख्या वारो वारा, निरगुण

सरगुण नाउँ प्रगटाईआ। कागद कलम शाही लेखा लिख लिख दित्ता संसारा, महांसारथी फेरा पाईआ। पंज तत्त वड्डिआई गुर अवतारा, बिन तत्त गुर धार ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा समझाईआ।

सिफ़रा निरगुण होया आप, आपणी दया कमाईआ। निरगुण हो के सरगुण थापण थाप, रीती जगत चलाईआ। जगत रीती अजप्पा जाप, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा रिहा उठाईआ।

निरगुण तों सरगुण होया, लोकमात वज्जी वधाईआ। आदि जुगादी नवां नरोइआ, गुर सतिगुर फेरा पाईआ। धुरदरगाही लै के आवे ढोआ, हरी हरि नाम करे पढ़ाईआ। चौथा जुग ना रहे सोया, सुरती शब्दी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा आपणी दस्से सच वडयाईआ।

सिफ़रा कहे मेरी वड्डिआई वड, वढ्ढी खोर भेव कोई ना आईआ। आपणी धार कर के अड्ड, निरगुण निराकार नूर रुशनाईआ। पंज तत्त काया माटी नाता जोड़ हड्ड, रत्ती रत्त आप महकाईआ। अन्तम सरगुण संसार गिआ छड्ड, निरगुण संग निभाईआ। निरगुण कर के पार हद्द, घर साचे डेरा लाईआ। अंदर वड़ के गाए छन्द, साचा राग अलाईआ। सिफ्त सालाही बत्ती दन्द, बेपरवाही वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिफ़रा आप जणाईआ।

साचा सिफ़रा दस्से हाल, हालत आपणी रिहा समझाईआ। बीस बीसे खेल महान, महिमा गणत गणी ना जाईआ। निरगुण सरगुण एका दूआ होया बेहाल, सिफ्त सिफ़र सिफ़र आपणा अंक बणाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, सरगुण शेर सिँघ नाउँ रखवाईआ। अन्त हो आप किरपाल, आपणा खेड़ा आपे ढाहीआ। निरगुण सरगुण दोहां मिटिआ निशान, निशाना नज़र कोई ना आईआ । निरगुण सरगुण दो आपणे घर होए परवान, दूजा देवे ना कोई वडयाईआ। तिन्ने सिफ़रे कर परवान, त्रैलोकां पन्ध मुकाईआ। इक्को दूआ रहे बलवान, इक्को सिफ़रा समझ समझाईआ। वीह सौ दा इक्क विधान, शाह पातशाह आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क तों दो दो तों सिफ़रा, सिफ़रा समझ किसे ना आईआ।

वीह साल पिच्छों फेर बणौण लग्गा आपणा फ़िकरा, फ़िकर सभ दा रिहा मिटाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दूर दुराडा रिहा विटरा, खुशी विच्च कदे ना आईआ। दीन मज़हब ज़ात पात दस्सदा रिहा भिटड़ा, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा सर्ब रूप समाईआ।

सिफ़रा कहे निरगुण सरगुण कट्ठे हो, दो सिफ़र बीस रूप वटाईआ। दोआ छे

घर दी वेखे लो, छे गुर ना कोई चतराईआ। गुर सतिगुर साहिब स्वामी आपे हो, बेपरवाह फेरा पाईआ। बीस बीस करे लो, नूरी जोत इक्क रुशनाईआ। मार्ग दस्से निरगुण सरगुण करे मोह, सरगुण भगत रूप वटाईआ। सिफ़रा आपणा आप सभ किछ गिआ खोह, ख़ाली हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी समझ ना किसे समझाईआ।

सुण दो दूआ तेरा रंग, समझ कोई ना पाईआ। निरगुण हो सरगुण नच्चया मलंग, लोकमात फेरा पाईआ। नाम हो निधान वजाए मरदंग, राग अनाद अलाईआ। अमृत हो आत्म पाए ठंड, अमिउँ रस रस चवाईआ। परमात्म हो आत्म पाए गंढु , गंढुणहार गोपाल गोसाईआ। दाता हो वस्त अमोलक वंडु , गुर अवतार दए वडयाईआ। मेहरवान हो भाण्डा भरम ढाहे कंध, दूई द्वैत मेट मिटाईआ। दीन दयाल हो गाए छन्द, सोहला आपणा नाम जणाईआ । सिफ़रा कहे मैं सूरा सरबंग, निरगुण सरगुण दोहां नालों होया नंग, परदा आपणा आप उठाईआ। चार जुग निरगुण सरगुण हो के मंगदा रिहा मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच दए वडयाईआ।

सिफ़रा कहे मेरी सिफ्त अथाह, हत्थ किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणया ना कोई गवाह, शहादत सच ना कोई भुगताईआ। निरगुण सरगुण दोए मंगदे रहे दुआ, सजदा सीस सीस झुकाईआ। रफ़ता रफ़ता आहिस्ता आहिस्ता जुग चौकड़ी नाम औंदे रहे बदला, बदौलत इक्को बेपरवाहीआ। निरगुण हो के सरगुण सरगुण हो के सिफ़रे विच्च गिआ समा, हसती कोई रहण ना पाईआ । सिफ़रा हो के किसे आ ना दस्सया मैं तुहाढ़ा खुदा, खुद आपणा फेरा पाईआ। तुसीं मेरे मैं तुहाढ़े नालों ना होवां जुदा, जुज़ वंढु ना कोई वंडाईआ। सिफ़र सिफ़र दा इक्को राह, सिफ़रा सभ दा बणे मलाह, बेड़ा सभ दा पार लगाईआ। बिन सिफ़रे इक्क इकल्ला इक्को रोवे मारे धाह, अग्गे सुणे ना कोई वडयाईआ। निरगुण निरँकार सरगुण शेर सिँघ नाम धरा, अन्तम धरनी उतों आपणा आप गिआ लुकाईआ। सति सरूप सिफ़रा रूप आप वटा, करे खेल बेपरवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, ढाई गज़ दोपट्टा करे इक्क परवान, निरगुण सरगुण दोहां दा लेखा दए समझाईआ।

सिफ़रा रूप सच रिहाइश, सच मकान जणाईआ। सिफ़रा ना जन्मे ना लए पैदाइश, नज़र किसे ना आईआ। सिफ़रा मकान ला-मुकाम जिस दी कोई ना करे पैमाइश, पैमाना हत्थ ना कोई उठाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण हो के आया कर ना सक्कया अज़माइश, अन्त कोई ना पाईआ। सिफ़रे दी मन्नदे रहे हदाइत, हुक्मे अंदर हुक्म चलाईआ। जे कोई लभ्भण जाए रिहाइश, नज़र किसे ना आईआ। आपणे अंदर आपणे मन्दर आपणी धार आपणे प्यार आपणे विहार विच्च करे ऐश, आरामगाह आपणा आप बणाईआ। (६ हाढ़ २०२० बिक्रमी) ✪ ✪ ✪ ✪ ✪

३२) निरगुण सरगुण दोआ धार, दोआ सिफ़र रूप समाईआ। सिफ़र कहे मेरा खेल अपार, भेव कोई ना पाईआ। दोआ कहे मैं वेखणहार, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। सिफ़र कहे मेरा अन्त ना पारावार, अंक अंकड़ा रूप ना कोई जणाईआ। दोआ कहे मैं हो उजिआर, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मैं कर खुआर, नाम निशान ना कोई जणाईआ। दोआ कहे साचा सिकदार, निरगुण सरगुण शाह पातशाह अखवाईआ। सिफ़रा कहे मैं मारां मार, रूप रंग रेख रहण कोई ना पाईआ। दोआ कहे मेरा वड्ड बलकार, निरगुण सरगुण दो जहान मिले वडयाईआ। सिफ़रा कहे मेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दूआ कहे निरगुण सरगुण मेरा खेल, आदि जुगादि कराइंदा। सिफ़रा कहे मैं वसां धाम नवेल, हत्थ किसे ना आइंदा। दूआ कहे निरगुण सरगुण आदि जुगादि जुग चौकड़ी चाढ़ां तेल, नित नवित्त सगन मनाइंदा। सिफ़रा कहे मैं फड़ के आपणे अंदर घत्तां सच्ची जेल, बाहर सके ना कोई कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूआ सिफ़रा दोहां भेव जणाईआ।

दूआ कहे मैं सभ तों वड्डा, इक्क तों दो बणाइंदा। सिफ़र कहे मैं सभ तों नढ्ढा, नज़र किसे ना आइंदा। दूआ कहे मैं सद बख्शंदा, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। सिफ़रा कहे मैं दोहां करां रंडा, खेल आपणे हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल जणाइंदा।

दूआ कहे मैं जोधा सूर, निरगुण सरगुण मेरा बल रखाईआ। सिफ़र कहे मैं सर्ब कला भरपूर, आप आपणे विच्च समाईआ। दूआ कहे मेरा खेल ज़रूर, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मैं सभ नूं करां कूड़, थिर कोई रहण ना पाईआ। दूआ कहे मेरा सरगुण निरगुण नूर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सिफ़रा कहे मैं सभ दे डोबे पूर, निरगुण सरगुण नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दूआ कहे सिफ़रे सच दस्स, की तेरे विच्च वडयाईआ। सिफ़रा अग्गों पिआ हस्स, मसख़रा बण जणाईआ। मैं सभ दे अंदर रिहा वस, आपणा आप ना कुछ रखाईआ। तूं दूआ हो के होएं प्रगट, सरगुण आपणी कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मेरी नाड़ मास हड्ड ना कोई रत्त, रत्ती रत्त ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सिफ़रा कहे सुण दूए हो दलेर, मैं तेरी दस्सां वडयाईआ। तूं निरगुण रूप हो के सरगुण बणिउँ सिँघ शेर, लोकमात कर रुशनाईआ। पंज तत्त चोला हंढ्ढाया ढेर, तन ख़ाकी रंग रंगाईआ। किसे किसे उत्ते कीती थोड़ी थोड़ी मेहर, डरदे डरदे आपणी

कार कमाईआ। वसदा रिहों नेरन नेर, काया मन्दर अंदर आपणा आप बन्द कराईआ। मैं सिफ़रा हो के तेरा निरगुण सरगुण फेर आप दिता निबेड़, तेरा निशान नज़र कोई ना आईआ। सिफ़रा हो के खेली आपणी खेड, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। सचखण्ड विच्चों आपणा सिफ़रा दिता भेज, जिस दे नाल लग्ग जाए उस दा अंक दए वधाईआ। निरगुण सरगुण मैं निक्की जेही छेड़दा रिहा छेड़, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। नाल इशारे लोकमात देंदा रिहा रेड़, पिच्छों इक्को निक्का धक्का लाईआ। जुग चौकड़ी फेरा रिहा फेर, पान्धी पान्धी मार्ग लाईआ। किसे ना दस्सया आपणा हेर फेर, हेर फेर ना किसे समझाईआ। सारे घत्ते विच्च अंडज जेर, बिन मात पित जन्म कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाईआ।

दूए सुण करावां याद, सिफ़रा इक्को इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण हो के मंगण इक्क दूजे दी दाद, बिन सरगुण निरगुण कम्म किसे ना आइंदा। सरगुण निरगुण इक्क दूजे दे उत्ते करन राज, शाह पातशाह भेव ना कोई खुल्ह़ाइंदा। सरगुण निरगुण इक्क दूजे नूं मारन आवाज़, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाइंदा।

सिफ़र कहे सुण मेरी कार, निरगुण सरगुण दिआं समझाईआ। मैं कल्ला हो के किसे नज़र ना आवां विच्च संसार, मेरी कीमत कोई ना पाईआ। कर किरपा जिस दे नाल करां प्यार, तिस देवां माण वडयाईआ। निरगुण सरगुण शेर सिँघ किसे ना आया विच्च विचार, विचार सके ना कोई राईआ। जिस वेले सिफ़रा बध्धी धार, लक्ख चुरासी रिहा जगाईआ। सिफ़रे अंदर घुंडी अपार, जिस दा परदा कोई खोल्ह़ ना सके राईआ। एह इक्को सिफ़रा जिस नूं कहन्दे सचखण्ड दुआर, चार कुण्ट नज़र कोई ना आईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दे विच्चों निरगुण निकले धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस विच्चों निकले गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव नूर रुशनाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दी आसा विच्च संसार, लक्ख चुरासी जून उपाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दे विच्च कोटन कोट चन्द सूरज अवतार, मण्डल मंडप बैठे मुख छुपाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दा आदि अन्त ना पारवार, बेअन्त कह कह सारे शुकर मनाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दा दर ठांडा दरबार, दरवाज़ा नज़र किसे ना आईआ। एह सिफ़रा इक्को जो प्रीतम प्यारा आप करे सच प्यार, सेज सुह्ज्जणी ना कोई सुहाईआ। एह सिफ़रा इक्को, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिफ्त सिफ्त सालाहीआ।

सिफ़रा कहे सुण सरगुण निरगुण, की तेरी वडयाईआ। जुग चौकड़ी खेल करें धुर अगम्मी नाद सुण सुण, सुण संदेसा राग अलाईआ। लक्ख चुरासी छाण पुण पुण, दर दर घर घर आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

निरगुण सरगुण बण दो, हरि साची कार कमाईआ। सिफ़रा रूप आपे हो, सभ दी करे सफ़ाईआ। सिफ़रे कोलों बण दो, दोए दोए जोड़ जुड़ाईआ। दोए जोड़ा सिफ़रा मोह, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस नाल जाए छोह, तिस निरगुण सरगुण वेखे दो दो, अन्त सिफ़र विच्च समाईआ।

सिफ़रा कहे मैं क्यों बलकार, की मेरे विच्च चतुराईआ। मेरी धारा सचखण्ड दुआर, सच सच सरनाईआ। मेरा दरवाज़ा थिर दरबार, घर घर विच्च इक्क प्रगटाईआ। मेरा लेखा विष्न ब्रह्मा शिव अधार, बैठण सीस झुकाईआ। मेरा इशारा गुर अवतार, पीर पैगम्बर नाउँ रखाईआ। मेरा नाअरा धुर जैकार, जै जैकार सुणाईआ। मेरा विहारा लक्ख चुरासी धार, जीव जंत वडयाईआ। मेरा विहारा अपर अपार, भेव कोई ना पाईआ। मेरा मनारा ठांडा दरबार, अगनी तत्त ना कोई रखाईआ। मेरा किनारा ना आर ना पार, अग्गा पिच्छा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा आपणी सिफ्त जणाईआ।

सिफ़रा कहे सुण मेरी सिफ्त, मैं सिफ्तां आप सुणाइंदा। मेरी सिफ्त अंदर लिख के गए लिख़त, गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। जिस नूं कहन्दे मेरा भविख्त, सो मेरे इशारे नाल मिलाइंदा। जिस दा खेल इक्क अनडिठ, जग नेत्र नज़र ना आइंदा। मेरी आस रक्खी किस किस, भेव अभेद खुल्ह़ाइंदा। जिस निरगुण सरगुण लिआ जित, तिस आपणा राह वखाइंदा। प्रेम प्रीती अंदर करदे गए हित, नित नित ध्यान लगाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान दस्सदे गए ना कोई वार ना कोई थित, हरि करता आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा।

सिफ़रा कहे सुण मेरे मीत, मैं सच सच जणाइंदा। निरगुण सरगुण जगत रीत, मेरा लेख लिखत विच्च ना आइंदा। चार चौकड़ी जुग चार नव नौं मेरी रक्खे उडीक, ध्यान ध्यान विच्च प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा।

सिफ़रा कहे मेरी करन ताअरीफ़, निरगुण सरगुण सोहले गाईआ। सरगुण सरगुण हो के करन प्रीत, निरगुण निरगुण हो के राह जणाईआ। मैं वसां धाम अतीत, घर साचे सोभा पाईआ। मेरा ध्यान रक्खदे गए बीस बीस, दूआ सिफ़रे हो हो जाईआ। सभ दे ख़ाली होए खीस, पल्ले गंढु ना कोई बन्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा आपणा भेव रिहा जणाईआ।

सिफ़रा कहे मैं वड बलवान, मेरा अन्त किसे ना पाया। गुर अवतार धरदे गए ध्यान, पीर पैगम्बर नैण उठाया। जिस ने कीता निरगुण सरगुण जगत निशान, सो सिफ़रा रूप अखवाया। जिस दा लेखा दो जहान, दोए आपणा राह वखाया। जो साहिब मर्द मरदान,

मर्द मरदानगी इक्क कमाया। जिस दा राग राग तरान, जिस दा गीत गीत अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्ह़ाया।

सिफ़रा कहे मैं वड्ड बलवाना, मेरा अन्त कहण कोई ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगदे गए दाना, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। मैं सभ नूं दित्ता ज्ञाना, बोध अगाध पढ़ाईआ। इक्क सुणाया धुर फ़रमाणा, सच संदेस सुणाईआ। नव नौं खेल महाना, महिमां अकथ्थ कथ सुणाईआ। कलिजुग अन्तम खेल करे वाली दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़र वेखे सर्ब लोकाईआ।

सिफ़रा कहे मैं जग विच्च औणा, मेरा सर्ब ध्यान लगाईआ। मात पित ना किसे गोद उठौणा, जननी जन ना कोई अखवाईआ। रसना सीर ना किसे प्यौणा, उंगली नाल ना कोई फिराईआ। कुछड़ चुक्क ना किसे खडौणा, लोरी दे ना कोई सुआईआ। तन बसतर ना किसे सुहौणा, फड़ बाहों ना कोई नुहाईआ। सीस दस्तार ना कोई बंधौणा, पैरीं जोड़ा ना कोई छुहाईआ। तन बसतर ना कोई लगौणा, ढाकण को पत ना कोई जणाईआ। साक सज्जण ना कोई दरसौणा, नार कन्त ना कोई वडयाईआ। पुत्तर धीआं ना संग रखौणा, जगत कुटम्ब ना मेल मिलाईआ। पुस्तक पाठ ना कोई पढ़ौणा, संध्धया रूप ना कोई वखाईआ। हवन पवन ना कोई रखौणा, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। राग नाद ना कोई गौणा, धुन अनाद ना कोई शनवाईआ। सिफ़रा रूप हो के फेरा पौणा, पंज तत्त चोला जगत तजाईआ। सिफ़रा रूप गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्त वखौणा, उह बैठा ध्यान लगाईआ। सिफ़रे मिल के रंग रंगौणा, दोवें मिल बीस बीस वज्जे वधाईआ। दूआ कहे मेरा खेल होए अनहोणा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मैं निरगुण भेव खुल्ह़ौणा, अनभव आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूए नाल जोड़ सिफ़रा गुर अवतार पीर पैगम्बरां आप करे ज़िकरा, पिछला फ़िकरा फाके वाला रहण ना पाईआ।

सिफ़र कहे मैं मेटां फ़िकर, फ़ातिआ सभ दा आप पढ़ाइंदा। बिन मेरे दूजा ना करे कोई ज़िकर, ज़ाहर ज़हूर ना कोई अखवाइंदा। कुछ वी नहीं फेर वी आवां नितर, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी बैठे विटर, सभ दा माण गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा।

सिफ़रा कहे मेरी कार अव्वली, नज़र किसे ना आईआ। हुक्मे अंदर जोत अट्टली, अट्टल धाम सीस निवाईआ। जे वेखण वली छली, ना वेखण ते बेपरवाहीआ। विचार करन गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरी निक्की जिही कली, जुग चौकड़ी लोकमात महकाईआ। धुर दी धार कर प्यार शब्द अपार निक्की जिही गल विच्च बध्धी टल्ली, कंठ विच्चों हुक्म नाल वजाईआ। एसे कर के सारे कहि के गए प्रभ जोधा बली, उहदा अन्त कोई ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी आपणे रस विच्चों दित्ती इक्को निक्की जिही फली, आपणा बाग़ बग़ीचा ना किसे दसाईआ। सिफ़रे विच्च वड़ के वेखी गुर नानक चरनां कोल

निक्की जिही गली, जिस दा अग्गे राह नज़र ना आईआ। जे वेखे तां दीपक जोत बली, ताब झल्लया कोई ना जाईआ। कर निमस्कार कहे तूं वड्डा बली, बेपरवाह तेरी वडयाईआ। श्री भगवान आपणे हत्थ उत्ते हत्थ रक्ख के रगढ़ी तली, तिलक आपणा दित्ता वखाईआ। सवा रत्ती इक्को डली, श्री भगवान आपणे हत्थ दी मैल लाहीआ। प्रेम प्रीती अंदर जेहड़ी मिली, जुग छत्ती लोकमात जगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

एसे कर के नानक किहा दान महिंडा तली ख़ाक, नज़र किसे ना आईआ। प्रभ इक्को वार प्रगटाई पाकी पाक, पत आपणे हत्थ रखवाईआ। निरगुण सरगुण दोहां दा तोड़ साक, आप आपणा भेव जणाईआ। सिफ़रा हो के ना ज़ात ना पात, ना सरगुण ना निरगुण, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। सिफ़रा कहे मैं सभ दे नालों आज़ाद, अंक अंक ना कोई बणाईआ। आदि अन्त सभ मेरी आस रखवाईआ। बिन मेरे सारे होण बरबाद, थिर कोई रहण ना पाईआ। मेरे मिलण दी सभ नूं ख़ाहश, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वडयाईआ।

सिफ़रा कहे मेरी सुणो कार, मैं सच सच जणाइंदा। करां करावां सच विहार, भेव अभेद खुल्ह़ाइंदा। पूरा करां कौल इकरार, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। संदेसा देंदा रिहा गुर अवतार, पीर पैगम्बर मात पढ़ाइंदा। कलमा कायनात कर उजिआर, वाहद इक्को इक्क समझाइंदा। ताअरीफ़ करदा रिहा संसार, तुआरफ़ आपणे हत्थ रखवाइंदा। रीस कोई ना करे परवरदिगार, सांझा यार हत्थ किसे ना आइंदा। आदि जुगादी एकँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा।

सिफ़रा हो के करया कम्म, आपणे हत्थ रक्खी वडयाईआ। पंज तत्त काया भाण्डा दिता भन्न, निरगुण सरगुण शेर सिँघ नज़र किसे ना आईआ । सच सच हो के बेड़ा बन्न्ह़, आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रे विच्चों फ़िकरा आप प्रगटाईआ।

सिफ़रे विच्चों प्रगटया फ़िकरा, फ़िकर आपणा आप कराइंदा। जगत जहान जो होया बिखरा, तिस आपणी गंढ पुआइंदा। चोटी चढ़ के वेखे सिख़रा, सच महल्ल आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

साची करनी सिफ़रा रूप, हरि सच सच कराईआ। कलिजुग अन्तम वेख चारे कूट, दह दिशा फोल फुलाईआ। कर्म धर्म बरन वरन नाता जुड़िआ जूठ झूठ, सच सुच ना कोई परनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

सिफ़रा हो के आया आप, वड दाता बेपरवाहीआ। जिस नूं सरगुण निरगुण गोबिन्द

हो के कहि के गिआ मेरा बाप, पुरख अकाल सच्चा शहनशाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जिस दा करदे सारे जाप, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। सो साहिब सदा पाक, पवित रूप वटाईआ। जिस दर्शन नूं नेत्र लोचण रहे झाक, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। सो साहिब सभ दा साक, नज़र किसे ना आईआ। सभ दा लेखा करे बेबाक, सिफ़रा अंक अन्त बणाईआ। ख़ाली करे जगत हाथ, वस्त हत्थ ना कोई फड़ाईआ। देवणहार आदि जुगादी दात, वड दाता वड वडयाईआ। कलिजुग अन्तम खेल तमाश, बेपरवाह आप कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे कर आप जमात, अक्खर इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अव्वला, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। कलिजुग अन्तम वेखणहारा जलां थलां, उच्चे टिल्ले परबत फोल फुलाइंदा। जोत प्रकाश पुरख अबिनाश नूरी धार आपे बला, दीआ दीपक डगमगाइंदा। सच संदेस नर नरेश इक्को घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा साची कार कमाइंदा।

सिफ़रा कहे मेरी साची कार, नज़र किसे ना आईआ। नव नौं चार मेरा तक्कदे गए दीदार, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। दरवेश बण के मंगदे गए भिखार, झोली अग्गे आपणी डाहीआ। दोए जोड़ करदे गए निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। कह के गए कल अन्तम आवे कल कलकी अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जो सिफ़रा रूप वेखे संसार, इक्क सिफ़रे विच्च वडयाईआ। सिफ़रे विच्चों एका महल्ल करे त्यार, त्रैगुण अतीता आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अपारा, अपरंपर धार चलाइंदा। कलिजुग अन्त हो उजिआरा, भेव अभेद खुल्ह़ाइंदा। महल्ल अट्टल इक्क मनारा, दो जहानां आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा।

साचा भेव खोल्ह़ करतार, उहला रिहा जणाईआ। सिफ़रा सति हो उजिआर, सति सतिवादी कार कमाईआ। साढ्ठे सत्त दे आधार, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। लेखा जाण जगत जगतार, जग जीवणदाता आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

खेल करन दा साचा चाउ, सिफ़रा आपणे विच्चों प्रगटाइंदा। करनहारा सच नयाउँ, अदालत इक्को इक्क लगाइंदा। पकड़नहारा साची बाहों, भगत भगवान आप जणाइंदा। लेखा जाण पुत्तर माउँ, पिता पूत गोद सुहाइंदा। देवे वड्डिआई साचे थाउँ, जिस धाम दी गुर अवतार पीर पैगम्बर उडीक रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा।

सिफ़रा कहे मैं खोलूं भेद, भेव कोई ना पाईआ। जिस धाम दा लेखा लिखया विच्च साम वेद, अंक नौं सौ इकत्तर सतर अठ्ठ अठ्ठ वडयाईआ। सो धाम होए उजिआर, जिस मिले माण वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा सभ दी सांझ बंधाईआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अपारा, आदि जुगादि कार कमाइंदा। हुक्मे अंदर फिरे सूरज तारा, मण्डल मंडप नाच नचाइंदा। जुग चौकड़ी हो उजिआरा, हुक्म हासल इक्क समझाइंदा। साचा धाम गुर अवतार पीर पैगम्बर करे निमस्कारा, सजदा इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाइंदा।

साची करनी राम राम, आपणी हरि जणाईआ। साचे धाम कर अशनान, बैठा आसण लाईआ। इक्को इक्क इक्क निशान, निरगुण सरगुण देवे वखाईआ। सरगुण वेख होया हैरान, पंज तत्त रहण ना पाईआ। पंज तत्त सिफ़रा रूप विच्च जहान, लेखा हत्थ ना कोई वखाईआ। इक्को खोलू वेखे भगवान दा भगवान, सो भगवान जो राम विच्च हो के राम रिहा समाईआ। कर किरपा दित्ता दान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। एह भूमका सच असथान, जिस दा भेव कोई ना पाईआ। इक्क भीलणी दे ज्ञान, शब्द इशारे नाल समझाईआ। बालमीक ला के जाए निशान, चोरी चोरी सेव कमाईआ। त्रेते विच्च कोई ना लए पहचान, वेला दूर दुराडा रिहा दसाईआ। कलिजुग अन्त करे खेल आप मेहरबान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वधाईआ।
(पहली वसाख २०२० बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

३३) निरगुण रूप जन सन्त लोड़े। दूसर नाल ना संग जोड़े। एका घाले साची घाल, जगत जंज़ाल तोड़े। आत्म वेखे इक्क अनमुलड़ा लाल, काया झूठे डोले। गुरमुख विरला लए भाल, जोत सरूप दर बैठे कोले। सच प्रीती अन्तम निभे नाल, भगत जन कदे ना डोले। शब्द सरूपी इक्को ताल, इक्क दूजे दे वसे कोले। हरि सन्त सदा सदा प्रितपाल, गुरमुख आत्म सदा बोले। फल लगाए इक्क काया डाल, धर्म कंडे साचे तोले। चले जगत अव्वलड़ी चाल, मनमुखां रक्खे पड़दे ओहले। साचे सन्त तोड़ जम काल, साचा रंग चढ़ाए चोले। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सन्त जनां, आत्म अंदर साचे मन्दर डूंघी कंदर सद सद हस्स हस्स बोले। (१६ हाढ़ २०१६ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

३४) सरगुण निरगुण हो के सिफ़र, रूप रंग रेख ना कोई रखाईआ। निरवैर हो के चढ़या सिखर, महल्ल अट्टल डेरा लाईआ। सच दुआरे कीता फ़िकर, फ़िकरा आपणा

नाम जणाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जिस दा हुंदा रिहा ज़िकर, सो ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। आदि जुगादी सभ दा पितर, पिता पूत गंढु पवाईआ। दो जहानां बण बण मित्र, सगला संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बीस दए वडयाईआ।

सरगुण निरगुण चढ़या घोड़े, ज़ीरो आपणी धार वखाईआ। दो जहानां आपे बौहड़े, पुरीआं लोआं खण्डां ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। शब्द अगम्म लाए दोहड़े, दोहरा इक्को इक्क सुणाईआ। करे प्रकाश अन्ध घोरे, जोती नूर नूर रुशनाईआ। शाह पातशाह वड सुल्ताना इक्क रखाए आपणा ज़ोरे, ज़ोरू ज़र ना कोई चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बीस दए समझाईआ।

दूआ सिफ़रा बणया बीस, हरि सतिगुर दए वडयाईआ। कोई ना करे प्रभ की रीस, बेअन्त बेअन्त अन्त कहण कोई ना पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देंदा रिहा हदीस, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। नाम निधान प्रगट करदा रिहा ज्ञान, राग छतीस सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। निरगुण सरगुण बणौंदा रिहा विधान, धुर फ़रमाना हुक्म प्रगटाईआ। भूपत भूप बण राजान, शहनशाह आपणा रूप वखाईआ। पुरख अगम्म बण बण काहन, साची रचना आप रचाईआ। महल्ल अट्टल उच्च मकान, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण वेख निशान, धर्म निशाना इक्क झुलाईआ। लक्ख चुरासी पावे आण, भय भउ सर्ब मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बीस अंक बणाईआ। (१४-७७४)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

✪ १३ फग्गण २०१६ बिक्रमी चन्दा सिँघ राज सिँघ प्रताप नगर दिल्ली ✪

निरगुण शब्द निरगुण जोत, निरगुण निरगुण आप अखवाईआ। निरगुण मन्दर दवार किला कोट, निरगुण निरगुण बैठा आसण लाईआ । निरगुण नाम नगारा वज्जे चोट, निरगुण निरगुण रिहा सुणाईआ। निरगुण निरगुण उत्ते होए मोहत, मुहब्बत इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण करनी आप कमाईआ। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, शहनशाह निरगुण आप अखवाइंदा। निरगुण राज निरगुण राजान, भूपत भूप निरगुण आप हो जाइंदा। निरगुण भिखारी निरगुण देवणहारा दान, निरगुण झोली अग्गे डाहिंदा। निरगुण वस्त वस्त महान, निरगुण दस्त बदस्त देवे आण, निरगुण आपणी धारा आप बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा।

निरगुण दर निरगुण दरवेश, निरगुण निरगुण अलख जगाईआ। निरगुण शाह निरगुण नरेश, नर नरायण निरगुण अखवाईआ। निरगुण सदा सदा रहे हमेश, निरगुण रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। निरगुण निरगुण करे आदेश, निरगुण निरगुण सीस झुकाईआ। निरगुण निरगुण लए वेख, निरगुण नेत्र नैण अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। निरगुण वसे साचे देस,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। निरगुण दयाल ठाकर स्वामी, निरवैर पुरख निरगुण अखवाइंदा। निरगुण आदि जुगादि सदा निहकामी, निरगुण निहचल धाम आसण लाइंदा। निरगुण सदा सदा अन्तरजामी, निरगुण दो जहानां वेख वखाइंदा। निरगुण बोध अगाध अगम्मी बाणी, निरगुण भेव अभेद खुलायंदा। निरगुण निरगुण खेल महानी, निरगुण ख़ालक आपणी कार कमाइंदा। निरगुण परवरदिगार नूर नूरानी, निरगुण लाशरीक अखवाइंदा। निरगुण मुकामे हक़ होए प्रधानी, निरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। निरगुण सचखण्ड वखाए आपणी सच निशानी, निरगुण सच निशाना आप झुलाइंदा। निरगुण महिमा गाए अकथ्थ कहाणी, निरगुण भेव कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी खेल आपणे हत्थ रखाइंदा।

निरगुण दाता पुरख समरथ, निरगुण निराकार अखवाईआ। निरगुण चलावणहारा राथ, निरगुण खेवट खेट रूप वटाईआ। निरगुण निरगुण रक्खणहार हाथ, निरगुण बेपरवाह वड्डी वडयाईआ। निरगुण निरगुण पूरी करे आस, निरगुण आसा पूर आप हो जाईआ। निरगुण निरगुण देवे साथ, निरगुण सगला संग निभाईआ। निरगुण देवणहारा दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण साहिब कमलापात, निरगुण नारी कन्त रूप वटाईआ। निरगुण वेखे खेल तमाश, निरगुण मण्डल रास रचाईआ। निरगुण धार बंधाए पृथ्मी आकाश, निरगुण रव सस सूरज चन्न करे रुशनाईआ। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव करे दास, निरगुण एका डोरी नाम तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ।

निरगुण निरगुण पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, जीवण जुगत ना कोई जणाइंदा। सचखण्ड निवासी करे आपणा कम्म, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण आपणा बेड़ा बन्नु, निरगुण आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि मध एका धार चलाइंदा। निरगुण आदि पुरख आप, निरगुण अन्त आप अखवाईआ। निरगुण मध खेल तमाश, कोटन कोट जुग आपणा राह जणाईआ। निरगुण खेल वेल जुगादि, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण लेखा जाण गुर अवतार, भगत भगवन्त साध साची साधना इक्क रखाईआ। निरगुण निरगुण शब्द अगम्म देवणहारा दाद, नाम निधान श्री भगवान इक्क जणाईआ। निरगुण वेखणहारा वाद विवाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

निरगुण निरवैर पुरख अकाल, इक्क इकल्ला हरि अखवाइंदा। निरगुण दाता दीन दयाल, दीना नाथ वेस वटाइंदा। निरगुण सेवा लाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा थिर घर आप प्रगटाइंदा। निरगुण हुक्मे अंदर हुक्म रखाए महांकाल, महिमां आपणी आप समझाइंदा। हुक्म अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी कल प्रगटाइंदा।

निरगुण जोत निरगुण प्रकाश, निरगुण अन्ध अन्धेर मिटाईआ। निरगुण मण्डल निरगुण रास, गोपी काहन नचाईआ। निरगुण पृथ्मी निरगुण आकाश, निरगुण सूरज चन्द रुशनाईआ। निरगुण खेल निरगुण तमाश, खेलणहार आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण मेला निरगुण मेल मिलाईआ।

निरगुण नार निरगुण कन्त, सेज सुहञ्जणी निरगुण आप हंडाइंदा। निरगुण जोत निरगुण भगवन्त, निरगुण श्री भगवान नाउँ रखाइंदा। निरगुण पुरख अगम्म महिमां अगणत, निरगुण निराकार अजूनी रहित अनभव प्रकाश कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दवार खेल अपार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी वंढु आपणे हत्थ रखाइंदा।

निरगुण वंड सरगुण रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। निरगुण दात निरगुण भिखारी मंगे मंग, सरगुण इक्को घर जणाईआ। तत्तव तत्त इक्क अनन्द, बंधन बंधप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ। निरगुण खेल अपार, सो पुरख निरञ्जण आप कराइंदा। त्रैगुण माया कर पसार, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। मन मत बुध कर शंगार, दर दवारा आप खुल्ह़ाइंदा। आसा तृस्ना भर भंडार, माया ममता हउमें नाल रलाइंदा। काया मन्दर कर पसार, डूंघी कंदर आसण लाइंदा। अनहद नाद शब्द धुनकार, अनरागी राग अलाइंदा। जोती जोत जोत उजिआर, नूर नूराना डगमगाइंदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता साची रीता आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण संग लाए प्रीता, निरगुण प्रेम प्यार इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण इक्को भेव खुल्ह़ाइंदा।

निरगुण खोल्हे भेव, अभेद आप हो जाईआ। आदि पुरख सदा निहकेव, निहचल आपणा आसण लाईआ। नाम जणाए रसना जिहव, पवण स्वास समाईआ। अगम्म अथाह अलक्ख अभेव, बेअन्त वड वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए वडयाईआ।

सरगुण नाता पंज तत्त, निरगुण जोत रुशनाईआ। निरगुण देवे ब्रह्म मत, पारब्रह्म पढ़ाईआ। सरगुण निरगुण होए वस, दोए जोड़ सरनाईआ। जगत जीवण चले रथ, रथवाही बेपरवाहीआ। शब्द अनादी वजाए नद, अगम्मी धार वखाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। निझर देवे इक्को रस, अमृत झिरना आप झिराईआ । सति सतिवादी साचा राह दस्स, दह दिशा खोज खुजाईआ। महिमां जणाए अकथ्थना अकथ्थ, कातब लिख लिख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आदि निरगुण जुगादि निरगुण जुग जुग वंढु वंढुाईआ।

जुग जुग सरगुण धार, निरगुण आप चलाइंदा। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट डेरा लाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी कार आप कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, ब्रह्म आपणा मेल मिलाइंदा। नाउँ धर गुर अवतार, गुर गुर शब्दी राग अलाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोल्ह किवाड़, दो जहानां हट्ट चलाइंदा। लेखा जाण सच्ची सरकार, शहनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी रच संसार, खाणी बाणी मेल मिलाइंदा। धुर फ़रमाना देवे निरँकार, शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान आप दृढ़ांइंदा। अञ्जील कुरान दए आधार, शब्दी धार वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण कर उजिआर, महांसारथी आपणा रथ चलाइंदा। सच संदेसा वारो वार, जुग चौकड़ी आप सुणाइंदा। सिफ्ती सिफ्त भरे भंडार, गुर अवतार रसना जिह्वा गाइंदा। पीर पैगम्बर करन गुफ्तार, कलमा नबी रसूल समझाइंदा। भगत भगवान दरस दिखाल, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। सन्त सुहेले रक्खे नाल, सैहज सुभाउ मेल मिलाइंदा। गुरमुखां अन्तर आत्म कर पछाण, परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरसिखां लग्गी निभे नाल, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग आप सिखाल, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा।

निरगुण सरगुण पढ़ाए बोध, अगाध वड्डी वडयाईआ। निरवैर निरँकार सार समाल हिरदा सोध, हरि जू आपणा रंग वखाईआ। भाग लगाए काया माटी कोट, शब्द चोट इक्क जणाईआ। निराली प्रकाश कर जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ । निरवैर खोल्ह सोत, सुरती शब्दी आप मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग सरगुण देवे पंज तत्त वडयाईआ।

सरगुण पंज तत्त वड्डिआ, लोकमात दया कमाइंदा। गुर अवतार मार्ग ला, पीर पैगम्बर सिफ्त सलाह जणाइंदा। कोटन कोट नाम धरा, रसना जिह्वा सर्ब पढ़ाइंदा। आप छुपया रहे बेपरवाह, नेत्र नज़र किते ना आइंदा। चार जुग भविख्त भविख्त भविख्ती गिआ जणा, भाखिआ आपणी आप जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण गवाह, शहादत इक्को नाम पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच निशाना गए जणा, लिखया लेख ना कोई मिटाइंदा। कलिजुग अन्तम आवे बेपरवाह, पड़दा आपणा आप उठाइंदा। कल कलकी जामा पा, निहकलंका डंक वजाइंदा। शब्द अगम्मी चोट लगा, दो जहानां आप उठाइंदा। सम्बल आपणा डेरा ला, चाउ घनेरा इक्क रखाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी घेरा पा, सत्तां दीपां वंड वंडाइंदा। कूड़ी क्रिया डेरा ढाह, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे थाउँ थां, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। दो जहानां जणाए इक्को नां, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग दे विछड़े लए मिला, पूरब लेखा सर्ब वखाइंदा। दीन मज़हब ज़ात पात नेत्र नैणां नाल दरसा, शब्द इशारा इक्क कराइंदा। सरगुण भुलया बेपरवाह, पारब्रह्म नज़र किसे ना आइंदा। पढ़ पढ़ विद्या श्री भगवान गए भुल्ला, भुलयां मार्ग ना कोई पवाइंदा। अञ्जील कुरान वेद पुरानां झगड़ा पिआ थां थां, खाणी बाणी, वंढु ना कोई वंढुाइंदा। निरगुण दाता नेत्र नैण वेखे इक्क ध्यान, पड़दा उहला लाहिंदा। मुकामे हक़ हो रुशना, रोशन ज़मीर

इक्क कराइंदा। तहकीक करे आप खुदा, खुदी सभ दी वेख वखाइंदा। चौदां तबकां पड़दा आप उठा, मुख नक़ाब ना कोई रखाइंदा। रहबर बण दो जहान, निरवैर आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता निरवैर आपणी कार कराइंदा।

निरवैर आए पुरख अकाल, अकल कला वडयाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। चारे वरनां हो दयाल, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश अंग लगाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहनशाह इक्को घर वसाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, निरगुण आत्म निरगुण परमात्म निरगुण मन निरगुण बुधी निरगुण मत लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण अंस सरगुण बंस सरबंसा वेख वखाइंदा। निरगुण मणीआं निरगुण मंत, सरगुण मंतर आप पढ़ाइंदा। निरगुण नार निरगुण कन्त, सरगुण काया चोली सेज हंडाइंदा। निरगुण महिमा निरगुण अगणत, सरगुण रसना जिह्वा गाइंदा। निरगुण गढ़ सरगुण हउमें हंगत, माया ममता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण आप उठाइंदा। निरगुण पारब्रह्म, ब्रह्म निरगुण आप जगाईआ। निरगुण करे साचा कर्म, निहकर्मी वड वडयाईआ। निरगुण आदि जुगादी इक्को धरम, वरन गोत ना कोई रखाईआ। निरगुण निरवैर इक्को रक्खे सरन, शिवदवाला मढ़ मन्दर मसजद गुरूदवार ना कोई जणाईआ। निरगुण निरवैर इक्को जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोई रखाईआ। निरगुण घट घट अंदर रक्खे वास, घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी इक्को नर, नर नरायण वड्डी वडयाईआ।

निरगुण नर निरगुण नार, निरगुण पूत सपूत बणाइंदा। निरगुण भूशन निरगुण शंगार, निरगुण वेस अनेक वटाइंदा। निरगुण नाद शब्द धुनकार, निरगुण लिख लिख लेख जगत जणाइंदा। निरगुण शास्त्र सिमरत वेद पुरान कर उजिआर, निरगुण खाणी बाणी वंढु वंढ्ढाइंदा। निरगुण सभ दा लेखा करे आर पार, बेपरवाह आपणे विच्च छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त शब्द शब्दी इक्को मंत, मंत्र इक्को इक्क जणाइंदा। निरगुण मंत आदि सो, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। निरगुण हँ ब्रह्म हो, पारब्रह्म वंढु वंढ्ढाईआ। दोहां विचोला भेव ना जाणे को नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा बीज आपे बो, पत्त डाली आप महकाईआ। अन्तम मालण बण के आपे लए खोह, कली कली लक्ख चुरासी आप तुड़ाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले भगत भगवान साची लड़ी लए परो, नाम तन्द हत्थ उठाईआ। साचा नाम दृढ़ाए सोहँ सो, आदि अन्त मध आपणी धार जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपे हो, ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण करे पढ़ाईआ।

हं ब्रह्म निरगुण याद, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सो पुरख निरञ्जण सुण फरयाद, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। मेल मिलावा माधव माध, मोहण मोहणी आपणा रंग वखाइंदा।

देवणहारा धुरदरगाही दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। रक्खणहारा साच लाज, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। वक्त सुहञ्जणा करे काज, आदि निरञ्जण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण वंड खेल ब्रह्मण्ड, हरि शब्द अगम्मी साचा छन्द, दो जहानां आप अलाइंदा।

दो जहानां निरगुण धार, हरि शब्द शब्द जणाईआ। सतिजुग सति सति वरतार, सति सतिवादी आप वरताईआ। सति सति दए आधार, ब्रह्म मत इक्क जणाईआ। रत्ती रत्त कर खुआर, चोली अगम्मड़े रंग रंगाईआ। गढ़ झूठ हँकार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाईआ। सच सच कर प्यार, सुरती शब्द दए मिलाईआ। गुरमुख हरिजन दए उधार, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। साचे सन्तन खोलू किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। भगतन मेला धुर दरबार, धुर दरबारा इक्क वखाईआ। साचे मन्दर दए बहाल, चौथे पद मिले वडयाईआ। चौथे पद आप संभाल, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। थिर घर वखा सच्ची धर्मसाल, शब्द शब्दी विच्च समाईआ। जोती जोत कर प्यार, थिर घर पन्ध आप मुकाईआ। सचखण्ड देवे सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे सोभा पाईआ। निरगुण निरगुण लै के जाए नाल, गुरमुख आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण रूप पुरख अबिनाशी जन भगतां रक्खे उत्तम ज़ात, आत्म जोड़े साचा नात, जोती जोत मिलाईआ।

निरगुण मेला निरगुण जोत, जोती जोत मिलाइंदा। निरगुण गुरू निरगुण चेला निरगुण वसे साचे कोट, मन्दर साचा सोभा पाइंदा। निरगुण खेल पिता पूत, सपूत आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्को काहन, वेखणहारा दो जहान, वसणहारा सच मकान, सचखण्ड निवास पुरख अबिनाशी अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह दाता दानी बेपरवाह, जन भगतां बणे आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। निरगुण बेड़ा चुके कंध, कंध आपणे भार उठाईआ। संग सुहेला हरि बख्शंद, बखशिश आप कराईआ। दो जहानां मेट पन्ध, पान्धी आपणा चरन उठाईआ। गीत सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला इक्क जणाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निझ आत्म करे रसाईआ। सच दरवाज़ा जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। सचखण्ड दा सिँघासण सोहे पलँघ, पावा चूल ना कोई वडयाईआ। शब्द राग ना कोई मरदंग, नाद धुन ना कोई शनवाईआ। निरगुण रूप सदा सरबंग, परम पुरख बैठा आसण लाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा रक्खण संग, विछोड़ा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण विछोड़ा निरगुण मेला निरगुण सरगुण आपणे घर मिलाईआ।

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

३६) इक वसे हरि हर थाउँ, आत्म खोजो भाई। दूसर कोई दिसे ना, निरगुण रूप जोत रघुराई। (१६ हाढ़ २०११ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪